

www.vallabhacharyakrupa.org



॥ ज. व. ॥ टीका श्रीहरिरायजीकृत भाषामें संपूर्ण ॥ इति श्रीकृष्ण
 ॥ १३३ ॥ टीका संपूर्णम् ॥ अथ वरसोत्सवके कीर्तन लिख्यते
 प्रथम जन्माहमीकी वधाईके पद ॥ राग देवगंधार ॥
 ब्रजभयोमहेरिकै प्रतजवयहवात सुनी ॥ सुनि आनंदे
 सबलोकगोकुलगणित गुनी ॥ वृजप्रचपरे पुंन
 पीकुलमुथिरयुनी ॥ ग्रहलगननष्ट भवत मोधिकी
 नीवेरधुनी ॥ सुनि धाई सब वृजनारिसहि सिंगार
 कीए ॥ तनपेहेरे नौतन चीरकाजरने नहीए ॥ कमिकंचु
 कीतिलकलिवाट सोभित हारहीए ॥ करकंकनकंच
 नयालमंगलसाजिलीए ॥ सुनि अपने अपने मेल
 निकसी भांति भली ॥ मांनो लाल सुनि नकी पोतिपिं
 जरन चूरि चली ॥ सरसो वमंगलगीत मिलिद सपांच
 अली ॥ मानो भोर भयोर विदेवि फलीक मलकली
 ॥ उर अंचल उडत न जो न्यो सारी सुरंग सुह्री ॥ मुष
 मांडे रोरी रंग से डुर मांग छुहा ॥ अब अवनन तरुन
 तरों नाबेनी सुधिल गुरी ॥ मिर वरषत कुसुम सुदे
 स मांनो मेघ फुरी ॥ धी मपेहेले पहेंची जाय अति
 आनंद भरी ॥ लई भीतर भवन बुलाय सबसि सुपा

यपरी ॥ एक वदन उधारि निहारि देति असी सघरी
 चिरजी योज सोरा नंद प्ररण कोम करी ॥ ५ ॥ पं निरि
 न धं नि यहरा ति धं नि यहर प्रहर घरी ॥ धन्य धन्य म
 हे रिज की कृषि भाग सुरांग भरी ॥ जिनि जायो एसे ॥
 प्रत प्रन कोम करी ॥ थिरया प्यो सब परिवार सन
 की मूल हरि ॥ ६ ॥ सुनि ग्वालन गायव हो रिवालक बो
 लिलीये ॥ गुरि गुंजाय सिवन धातु अंग अंग चित्र
 कीये ॥ सिरधिमोखन के मोद गायत गीत नए ॥ एक
 जो रि मृदंग बजावत सब तं भवन गण ॥ ७ ॥ एक ना
 चत करत कुलाहल धिर के तहर रदही ॥ मांनो वरषत
 भांरो मासनरी घुबई धवरी ॥ जाको जही जरी चित
 जाय कोतिक नही तरी ॥ रस आनंद मगन गुवालक
 रुवदत नही ॥ ८ ॥ एक धायनंद जपे जाय पुंनि पुंनि
 पाजयरे ॥ एक आपु आपु ही मांरुह सिह सि अंकभ
 रे ॥ एक अंबर सबे उतारि देत निसेक करे ॥ एक दधिरो
 चन अरु दूब सवन के सी सधरे ॥ ९ ॥ तवनंद रूय भए
 गादे अरु कु महायधरे ॥ नंदी मुष पितर पुजाय अंत
 र सोच हरे ॥ यमि चंदन चारु मगाय विप्रन तिलक

॥ ज० व० ॥ रें वरगुरजनदिनपेहेरायसवनकेपापपरें ॥ १० ॥ गनगै
 ॥ १३४ ॥ यागनीयनजाततरुनतेवछवटी ॥ तेचरहिंजमुंनान
 केकाछइनेइधचटी ॥ खुररुपेतामेपीठसौनेसीगम
 टी ॥ तेदीनीदिजनअनेकसीनेसीगेहराषिअसीसप
 टी ॥ ११ ॥ तवअपनेमित्रसुबंधुहसिहसिवोलिलि ॥ म
 थिमगमदमलयकपूरमाथेंतिलककाए ॥ १२ ॥ मलि
 मालापेहेरायवसनविचित्रदीए ॥ मानोअपतमांसअ
 षाहदादुरमोरजिए ॥ १३ ॥ वस्वंदीमागेरसतअगनभ
 वनभरे ॥ तेबोलेलेंलेंनोमहितकोऊनाविसरें ॥ जिनिजे
 जाओसोदीनोरसनंदरायरी ॥ अतिरोनमानपरधां
 नपूरणकोमकरे ॥ १४ ॥ सुरोहिनीअंबरमगायसारीसु
 रंगयनी ॥ तेदीनीवधुनबुलायजेसाजायवनी ॥ वेअ
 तिआनंदितवहारिनिजग्रहगोपधनी ॥ मिलिनिक
 सीदेतअसीसरुचिअपनीअपनी ॥ १५ ॥ तवघरघरभे
 रिमरंगपरहनिसानवजे ॥ वरवांधीवेदनवारअरुधु
 जकलससजे ॥ तवतारिनतेबेलोकसुषसंपतिननजे
 सुनिमूरसवनकीयरगतिजिनिहरिचरनभजे ॥ १५ ॥
 ॥ नैनभरिरेपोनंदकुमार ॥ जसोमति ॥ १३४

कृसिचंद्रमाप्रगटोयाहजकोउजियार ॥ १ ॥ वनजिनि
 जोउआनुकोउगोसुतअपगायगुवार ॥ अपनेअप
 नेभेषसवेमिलिलबोविविधिमिंगार ॥ २ ॥ हरदइवअ
 छितदाधिकुंमकुंममंडितकरहुदुवार ॥ पुरोचोकविधि
 धिमुक्तामणिगावोमंगलचार ॥ ३ ॥ चहुंवेरधुनिकर
 तमहामुंनिरोतनक्षत्रविचार ॥ उदयपुन्यकोपुजसां
 धरोमकलमिहिरातार ॥ ४ ॥ गोकुलवधुनिराषिआनं
 दितसुंदरताकोसार ॥ दासचतुर्भुजअचिरुजीवोगि
 रधरआनआधार ॥ ५ ॥ ॥ रागदेवगंधार ॥ आनुनंद
 महेरिकेवधाई ॥ प्रातसमैमोहनमुषनिरपतकोरि
 चंदछविपाई ॥ १ ॥ मिलिजेनारिमंगलगावतिनंद
 भुवनमेंआईदेतअसीसजीयोतेरोसुतकोरिकव
 रसकनारी ॥ २ ॥ नितआनंदवदतवंदावनउपमांक
 हीयनजाई ॥ मूरदासधनिधनिनंदघरनीनिरख
 तहीयोमिराई ॥ ३ ॥ ॥ रागदेवगंधार ॥ जमेकूलेफिरत
 अहीरा ॥ होराभयोनंदवावाकेसुखनिधिस्वामस
 रीरा ॥ ४ ॥ मंगलकलमइवदधिअछितवेदपदतदिन
 धीरा ॥ मागतग्यालवालवधाईआएदेउजसोरावीर

॥ ज. व. ० ॥ ॥ १३५ ॥ ॥
 ॥ कले नंद ग्याल पेहेगा छिर कत कुं म कुं म नीरा ॥ पर
 नंद रास को ग कुर प्रगरे जा दो वीरा ॥ ३ ॥ राग देव गंधार
 ग नी ज्य ह दिन लगत सुहायो ॥ जै जै चीतिर हे उर अं
 तर आ जु करत मन भायो ॥ १ ॥ कहैत नव नैक छ मा सु
 र की प्रेम मगन कछ गावे ॥ कहि कहि प्रत व्रज ज
 म हेरि को लाले लें उर लोवे ॥ २ ॥ ते से ई नंद रास जे रे म
 व का हरे त वधा ॥ श्री विठ्ठल गिरधर न लाल न नै मन
 की आस पु जाई ॥ ३ ॥ राग देव गंधार ॥ ग नी ज्य धं न्य ज
 न म रे आ जु ॥ धन्य धन्य कहैत हे गोकुल वधू सव पूरे
 हमारे काज ॥ १ ॥ धन्य धन्य गोपी ग्याल धनि गोकु
 ल धनि धं न्य धं न्य व्रज गरी ॥ प्रजी मनो कां म नाह
 मारी एसो वर न निहा ॥ २ ॥ ए सी कौ न करे नंद रा नी
 तुम विन प्रनवा ॥ श्री विठ्ठल गिरधर न लाल मख
 सब को ऊरे धि मिहात ॥ ३ ॥ राग देव गंधार ॥ आत समय
 उमि सोवत सुत को वर न उधा ल्यो नंद ॥ रहि नि संक
 ति से अकुलाने नैन नि सा के इंडु ॥ १ ॥ सुभ्र से ज मधि
 ते सुष नि क म्योग ये ति मर मिटि मंद ॥ मानुष यो नि नि
 मन मय त फे न फे द र्द दि पाई चंद ॥ २ ॥ सुनत च कोर ॥ १३५ ॥

सर उ विधा ए सषी जन सषा सु खंद ॥ रही न सु धि सरा
 रधी र की पी वत की म करंद ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ नंद
 भवन में अव ही देर लो लरिका एक भला ॥ कहा कहो अ
 ग अंग की सी भा को रिक को म कला ॥ १ ॥ गावत ह सत
 ह सावत ग्याल न कुल वति प करि डला ॥ पर मा नंद
 रास को ग कुर मोहन नंद लला ॥ २ ॥ राग बिलावल
 लाल को जन मद्यो स फि र आयो ॥ गो म गो म ते जा
 ति बुला ई मोति न चोक पुरा यो ॥ ३ ॥ दिन र स पे हे लें वा
 जन बाजत पंच शब्धुं निद्यो ॥ सव मिलि गावत गी
 त वधा ई घोष को त हल मोरी ॥ २ ॥ प्रथम सति मी रा
 ति विचार करत नंद मलि जाति ॥ श्री चंक नी नां ना
 विं जन लडु वा मही पात ॥ ३ ॥ इहि विधिक रि सव हाथ
 पषारे वी रा र ये मगाय ॥ जन मद्यो स दिन व्रत हे ता ते
 कोऊ कछ वन खाय ॥ ४ ॥ घटिका छेक रा ति ही त व सव
 उठे छ ल गुं न गा य ॥ लाल नू वा वत पंचा म त सो जु
 वती मंगल गा य ॥ ५ ॥ कुं नि फुले ल अरु अंग उवर नो
 के सरि सो हे गात ॥ उलो दिक कल स नू ए लाल न अं
 ग अंगो छति मात ॥ ६ ॥ पाग के सरी वा गो कुल ही मय

॥ ज० व० ॥ नपदुका लाल ॥ आभूषण सवहित सोपे हेरे काजर नेन
 ॥ १३६ ॥ विसाल ॥ मोरचंद्र का गुंजा धरि वेगे सिंघासन जु वराज
 भालतिलक गोरोचन मृगमरक मलयत्रदो ऊगाल ॥
 सनमुषत वेसिं गारल डेंती आभूषण अनूप ॥ स्याम
 कंचुकी सारी के सरी राजत जुगल सूरूप ॥ ऊपर पीतांबर
 रत्न ओटो ब्रजजन गावत गीत ॥ कनक थारि मोती ॥
 साधिया मुठिया आरती चीत ॥ अधर पीरे कुंभ कुं
 मधो स्तोक तिलक करत हेमात ॥ मुठिया वारि आरती वा
 रत भेट धरत वलि जात ॥ ११ ॥ तिरुगुर मे लिइ ध अचपो
 पुं निबी राहेत विशेष ॥ हर खेने रां न देत नंद बाबा द्वारि
 केश प्रभु देखे ॥ १२ ॥ रागा विलावत ॥ आजु नंद के
 द्वारें भीरा ॥ गावत मरारि करत कुलाहल प्रगटे हे सुंदर व
 लवीर ॥ १३ ॥ एक अति एक जाति विहा के एक माटे मंदि
 र के तीर ॥ एक नितिलक रोचना माये एक निकों पेहेरा
 वति चीर ॥ १४ ॥ एक नको गोरां न देत हे एक निके मन रा
 खत धीर ॥ सूरदास नंदन वनिधि पाई धन्य ज सोदा पुं
 न्य सरीर ॥ १५ ॥ रागा विलावत धन्य ज सोदा भागिति हा
 रो जिनि ए सो सुत जायो ॥ जाके दर सपर स मुख उपज

त गोकुलतिमरन सायो ॥ विप्र सुजन चारन बंदी जन
 सकल नंद गृह आण ॥ नौतन सुभग हरदधि अछित
 हरखित सीस वधाए ॥ गरग निरूपम कहै सुभल दिन
 अवगति है अविनास ॥ सूरदास सुनत प्रभु को ज सु
 आनंदे ब्रजवासी ॥ १६ ॥ आसाथरी ॥ ज सो माति नंदक
 ति पाय परे ॥ तेरो भलो मने होरी रगर निरुजि निमन
 हिडरो ॥ १७ ॥ दीनोहार सुदार कर कंकन मोति नधार भरे
 सूरदास स्वांमी प्रगटे हे ओ सर पर मंगर ॥ १८ ॥ रागा
 आसा ॥ देखो देखो अछुत अवगति की गतिके सो रूप
 धर्यो हे हो ॥ ती निलोक जाके उर वसत हे सो सपके
 कों न पयो हे हो ॥ १९ ॥ जाको नाल आदि ब्रह्मादिक सक
 ल विस्व सर सांध्यो हो ॥ ताको नाल छेदि ब्रज जुवति वां
 टित गा सो वांछो हो ॥ २० ॥ जा मुषको सनकादिक लोचत
 सकल चातुरी जं ने हो ॥ सो मुष चुंवत नंद सौदा इधल
 रल पटो ने हो ॥ २१ ॥ जिनि भुज ध्रुव प्रहलाद उवारे हरना
 कुस उर फारे हो ॥ ते भुज पकरि हेति हे गोपी नांचो नेक
 पियारे हो ॥ २२ ॥ जिनि अवनन सुनि गज की आपदा गरु
 डा सन विसरायो हो ॥ तिन अवनन के निकट ज सोदा ॥

ज०।

॥ नि० ॥

११२७।

गावे और हलरावे हो ॥ ४ ॥ अखिल लोक जाकी आस क
रत हैं सो माखन रेखि अखो रहे हो ॥ सो अरु तगिरवर दूते
भारो जो पलना सो रूप खो रहे हो ॥ ५ ॥ सुरनर सुनि जाको
ध्यान धरत हैं सिंधु समाधि नदारी हो ॥ सोई अखसर दा
स को गकुर गो कुल गोप विहारी हो ॥ ६ ॥ राग आसा व
री ॥ जागी महेरि पुत्र सुख देख्यो आनंद तरव जायो हो ॥
कंचन कल सहै मदि जपूजा चंदन भवन लिपि पायो हो ॥ १ ॥
त्रिसंपति वर ख्यो कुसुमनि अति फूलन गो कुल छाया
हो ॥ नंद कहै तई द्वासव पूजी मन मुष्टि फल पायो हो ॥ २ ॥
आनंद भरै करत को लाहल सुदित मुदिन नर नारी हो ॥
निरभय भये नि सांनव जावत देखै तनिसंके गारी हो ॥ ३ ॥
नाचत महेरि मुदिन की नोता तव जावत तारी हो ॥
सरदा सप्रभ गो कुल प्रगटे मथुरा कंस प्रहारी हो ॥ ४ ॥
राग धना श्री ॥ जो सो दारो नी सोवन फूलन फूली ॥ तुम्हा
रे पुत्र भयो कुल मंडन वासुदेव समतली ॥ १ ॥ हेत असी म
विरध जे ग्यालि निगां मगां मतै आई ॥ लेले भैरव बेलै नि
कसी मंगल चारु वधाई ॥ २ ॥ एसे दसक होय जो ओरे
सव को ऊख पावे ॥ वादो बंस नंद वाचा को परमानंद जि

१२७

यभावे ॥ राग सारंग ॥ गोकुल में वाजत कहां ब
धाई ॥ भार भई हे नंद जके द्वारे अष्ट महा सिद्धि आई
॥ ब्रह्मादिक सनकादिक जाकी चरणारेणु नही पाई
॥ सोई नंद को पूत कहावत कोतिक सुनो मेरी माई ॥ २ ॥
अंबरीष प्रह्लाद भभीक्ष्ण नित नित महै मागाई ॥
परमानंद दास को गकुर वृज जन को लिकराई ॥ ३ ॥ राग
सारंग ॥ सब ग्यालनां चें गोपी गावें ॥ प्रेम भगन कछू
कहेत नवांचे ॥ हमारे राय घर दोटा जायो ॥ सुनि स
ब लोक वधाए आयो ॥ ४ ॥ इधर दधित कावरि घोरी ॥
तंडुल इव अलंकृत रोरी ॥ लल परवाव जडुं डभी टोला
हम तपर स्पर्श करत कलाला ॥ ३ ॥ बोधा चंदन छिर क
त अंग ॥ लसत पत पद वसन सुरंगा ॥ ४ ॥ अनिरप
क गुल पुनि चदि आग ॥ पदत फिरत पग नव हेराए
॥ ६ ॥ सुधिन परे को काको नारी ॥ हसि हसि देखै पर स्पर्
तारी ॥ ७ ॥ बार बार पर भूषनरीने ॥ लटकत फिरत म
हार स भीने ॥ ८ ॥ सुरविमो न सव कोतिक भूले ॥ मुदि
त तिलोक विमोदित फूले ॥ ९ ॥ राग सारंग ॥ आ
जु वधाई को दिन नीको ॥ नंद घर निज सोमति जायो है

॥ ज० व० ॥ लालभांम तो जी को ॥ १ ॥ पंचराद धुनि वाजे वाजत घर
 ॥ १३५ ॥ घर ते आयो दी को ॥ मंगल कलस लिए ब्रज सुंदरि ग्वाल
 बनावत छी को ॥ २ ॥ देत असी ससकल गोपी जन जीवो
 को रवरी सो ॥ परमानंद रास को ठाकुर गोप भैरव जगरी
 सो ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ घर घर ग्वाल देत हे हेरी ॥ वाजि ॥
 ताल पयाव ज आव ज होल रमा मा भेरी ॥ ४ ॥ लटत रुपर
 त खात मिठाई कहिन सकत कोऊ फेरी ॥ उमर ग्वाल क
 रत को लाहल ब्रज वनिता सव घेरी ॥ नयु जाप ताका तो
 रन माला सवे सिंगारत सेली ॥ जेन कस कहेत परमा
 नंद प्रगटो कं सको बेरी ॥ ५ ॥ राग सारंग ॥ अधिको उदधि भ
 यो हे आंगन ॥ गोपी ग्वाल फेरत मेहे रां ने सकल संताप
 गयो ॥ वकसत पगु पिछो रागुं नीयन सर्व सुसदन द
 यो ॥ ६ ॥ नंदय सोदा के मन आनंद धों धी के प्रभु जन्म
 लियो ॥ ७ ॥ राग मलार ॥ होतो एक नंद वात सुनि आई ॥
 टोटा भयो नंद वाधा के आंग नव जति बधाई ॥ कहिये
 कहा कहत नहि आवे रत न भूमि सव छाई ॥ नाचत तरु
 न विरध और बालक गोर सको चमचाई ॥ ८ ॥ द्वारे भीर
 गोप ग्वाल न की वरनो कहावडाई ॥ मूरदास प्रभु गोकुल

प्रगटे भक्त जन नि सुख दाई ॥ ९ ॥ राग कां नरो ॥ भादों की
 अति रें नि अधियारी ॥ द्वारक पाद भाट भर रोके हि सरि
 सकंत कं सभय भारी ॥ १० ॥ गरजत गगन महा डर लागत
 बीच वहे जमुं ना जल कारी ॥ तातें सोच वहे जीय आवत
 को डुरि हें ससि वदन ऊज्यारी ॥ ११ ॥ तव पतिवो लिखन
 करि राखी वाकी हेन ताहि दिन भारी ॥ देखें धी ए सो मु
 त विसरत कहें सें जीवें महेतारी ॥ १२ ॥ सुनि सुनि दान
 वचन देव की केशीन बहुत भक्त न भय भारी ॥ कदि गए नि
 गड उघरि गए गोपुर मूर सुसंध बा वृष्टि निवारी ॥ १३ ॥
 राग कां नरो ॥ आवें भादों की अधियारी ॥ गरजत ग
 गन रां मिनि को धति गोकुल चले मुरारी ॥ १४ ॥ सेस सह
 स्वफन भूंद निवात सेत छत्र सिर तां न्यो ॥ वसुदेव अंक
 मध्य जग जीवन कहा करे गोपा न्यो ॥ १५ ॥ जमुं नाथा
 ह भई तिहि ओसर आवत जात न जां न्यो ॥ परमानंद रा
 सको ठाकुर देव मुनि न मन मां न्यो ॥ १६ ॥ कां नरो ॥
 भादों की रें नि अधियारी ॥ संख चक्र गदा परम विराज
 त मथुरा जन मलीयो वनवारी ॥ १७ ॥ बोलिली ए वसुदेव
 देव की बालक भयो परम रुचिकारी ॥ तुं मले जा उवे गि

॥ ज० व० ॥ याहिगोकुलअधमकंसको मोहिउरभारी ॥ सोवतस्वान
 ॥ १२७ ॥ येहेरुवाचरुंदिसखुलेकपादगएहेन्यारी ॥ पाछें सिंह
 हारतइंकतआगेहेकालिंदीभारी ॥ तवजीयसोचक
 रतगदेकेंअवविधिकहाविधातागंती ॥ कमलनेनको
 जोनिमहातमजसुं नाभईतरवनतरपांती ॥ ४ ॥ योहीचे
 हेग्रहनंदगोपकेंजिनकीसकलआपराध ॥ गोविंद
 प्रभुवडभागिजसोदाप्रगरेहेश्रीगोवर्द्धनधारी ॥ ५ ॥ राग
 कां० ॥ भारोंआगेअधीनसाको ॥ एमयुराजादो
 राइ ॥ प्रगरेचतुर्भुजदेविदेवकीमनबंधितफलपाइ
 ॥ ततक्षनहीवसुदेवकोलिखेंअरुतवालकनिरख्यो
 गात ॥ हारिकेशप्रभुपूजेताएतिनिजनमेसुततुंम
 तात ॥ २ ॥ रागकां० ॥ अधियारीभारोंकीराति ॥ वा
 लककोवसुदेवकीपरेपदेपछिताति ॥ १ ॥ गरजतग
 गनमहालागतहांमिनिआवतिजाति ॥ वेगतिउ
 गतिसेजसोवरिमैंकंसउरनिअकुलाति ॥ २ ॥ गोकुल
 वाजतिमुंनोवधाईलैंकनहेरिसिरात ॥ मूरदासआनं
 दनंदग्रहदेतकनकनगदाति ॥ ३ ॥ कां० ॥ एमोपूत
 देवकीजायो ॥ वासोभुजाचारिआयुधधरेकंसनिकें

दनआयो ॥ १ ॥ भरभारोंअधरातिअष्टमीदेवकीकंथ
 जगायो ॥ देख्योमुषवसुदेवकुंवरकोप्रकुलितअंगन
 मायो ॥ २ ॥ अबलेंजाहुवेगियाहिगोकुलबहुतभो
 तिसमुखायो ॥ रुंदेलगायचूंमिसुखहरिकोपलना
 मेंपोहायो ॥ ३ ॥ तववसुदेवलियोकरपलनांअपूजे
 सीसचहायो ॥ तारेपुलेयेहेरुवासोएजाग्योकोऊ
 नजगायो ॥ ४ ॥ आगेसिंहसैसतापाछेंकोरनासिका
 आयो ॥ हुंकारदेतछारमारगरीयेनंदभवनजवआ
 यो ॥ ५ ॥ नंदयसोदासुंनहुंवीनतीसुतजिनिकहोपरा
 यो ॥ जसोमतिकहीजाउधरअपनेकंन्यालेंघरआ
 यो ॥ ६ ॥ प्रातभयोभक्तिमैंकेमंदिरप्रोहितकंसपरा
 यो ॥ कंन्याभईकविदेवकीकंसखीयनरादसुंनो
 यो ॥ ७ ॥ कंन्यानामसुंन्योजवराजापापीमननपत्ना
 यो ॥ अतिप्रजुलितक्रोधआतुरकेंराजाबहुतरिसा
 यो ॥ ८ ॥ कंन्यामगायलईजवराजाधोवीपटकनआये ॥
 भुजाउघारिलेंगईउरतेंराजामनहिसिमायो ॥ ९ ॥
 वेदरुकह्योसुमूतरुभारयोसोडरउरमेंआयो ॥ मा
 धोकेप्रभुगोकुलप्रगरेभयोभक्तनमनभायो ॥ १० ॥

॥ ज० व० ॥

॥ १४० ॥

राग कां० न० ॥ यह धन धर्म ही ते पायो । नीकें राखि जसो रामे
पा नारायण व्रज आयो ॥ जाधन को मुनि जपत पसा
धत वेद रूपारन पायो ॥ जो धन धर्यो खारि सागर में ब्रं
ह्मा जाय जगायो ॥ जाधन ते गोकुल मुख लहियत
विगरे काज संवारे ॥ सो धन बार बार उर अंतर परमानं
द विचारो ॥ कां० न० ॥ जनमत ही आनंद भयो
नवनिधि प्रगट भई नंद द्वारें सब दुख शूरि गयो ॥
वसुदेव देव की मतो उपायो पलन भारु लयो ॥ कम
ला कंथ दियो हुंकारो जसुं ताया ह भयो ॥ नंद यसे
दाके मन आनंद गरगुलाय लयो ॥ परमानंद दा
स को गकुर गोकुल गार भयो ॥ कां० न० ॥ ज
सो मति तिहारो धर सब सब सो ॥ मुनि हो जसो दाति
हारे दोरा को हांत रुजि निवारष सो ॥ कोऊ करत
वेष्ट मंगल धुनि कोऊ व्रति आनंद लसो ॥ निरषि
निरषि मुख कमल नैन को आनंद प्रेम ही मेहुल सो
॥ हेत असी ससकल गोपी जन कोऊ बगवो कोऊ
ह सो ॥ परमानंद नंद गुरु आनंद पुत्र जनम भयो ज
गत जसो ॥ कां० न० ॥ अहो पीयसो उपाय

१४०

कछु कीजे ॥ जिहि उपाय अपनो यह बाल करारि के स
तें लीजे ॥ मन सावाचा कहै त कर्म नान प को को न पती
जे ॥ छल बल करि उपाय के सैं उकार अनत रुदीजे ॥ २ ॥
नाहिन एसो भागि हमारो यह मुख लोचन पुट सीजे ॥ पा
सर सास एसे सुत को जसुं श्रवण न सुनि सुनि जीजे ॥ ३ ॥
राग नायकी ॥ जनम लियो सुभलगन विचारो ॥ कस
पक्ष भादों निम आरें न छत्र रोहिनी अरु बुधवार ॥ १ ॥
संख चक्र गराय प्रविराजत कीट कुंडल उर मणि उजि
यार ॥ मुदित भाव सुदेव देव की प्रमानंद दास बलि हा
रा ॥ राग नायकी ॥ कले किरत नंद गोपराइ सुंदर स्या
म को जनम सुनत ही प्रकुलित उर आनंद न समाइ ॥
१ ॥ जाचक जनम सानिक दबुला एहेत दान कंचन मनि
गाइ ॥ बां नीवेष्ट पद तहि ज आगे सर निरपिय रम सु
ख पाइ ॥ राग अडानो ॥ रावलिके कहें गोप आजु
व्रज इनी ओ प को नंदे सुं नो बाजे गोकुल मे मदलरा
जसो दाके प्रत भयो दृष भांन जसो कछो ग्वाल बाल
लै लै धाए दृध दधि गगरा ॥ आगे आगे गोप हंदा
छे त्रिय मनोहर चलन न सके कोऊ पावत न डगरा ॥ चतु

भुजप्रभुगिरधारी को जनमसुनि फूल्यो फिरे जहानारद सो
 भवरा ॥ १॥ **अथ छठी के पद ॥ राग सारंग ॥** मंगलद्योस छ
 ठी को आयो ॥ आते देव जरा जसो राम नहु अधन धन पा
 यो ॥ १॥ कुंवर रुवाय जसो दारांनी कुलदिव्या के पाय परायो
 बहु प्रकार बिजन धरि ॥ आगे सब विधि भलो मना ॥ २॥ स
 बव जनारी बधावन ॥ आई सुत को तिलक क ॥ ३॥ जै जे क
 र होत ॥ गो कुल में परमानंद जस गायो ॥ ४॥ **सारंग ॥**
 आजु छठी जसो मतिके सुत की चली विधावन माई भूष
 न वसन साजि मंगल ले सकल मिगारवना ॥ १॥ भली बात
 विधिकरी बेसवही सुत पा ॥ नंदराई ॥ पुन्य पुंज फूले व
 जवासी घर घर होत ॥ २॥ प्रन काम भले एनि जज
 न के जीवें जस ॥ ३॥ परमानंद बात भई मन की सुदम
 जादा पाई ॥ ४॥ **अथ दसोधी के पद ॥ राग सारंग ॥** दोऊ
 हो और नंदरांनी वडे चोक वैठे जराज ॥ वाजन वाजत सिं
 घ द्वार पर मंगल बहुत चोगु नो आज ॥ १॥ छिर कतरवरि
 क भरे गायन के सोने रुपे चीर बहा ॥ परि पटि वेद असी
 सहेत दिज सुत चिर जीवोतुं मरमा ॥ २॥ फिरि गोप ग्वा
 ल पेहेरा ए और पेहेराई सब वजनारी ॥ आरती करी हु

लसिज सो मतिने आभूषन सब दए उतारि ॥ ३॥ सरव सु
 वारि देत न्योछावरि दसा दिन के मेरे लाल कहाए ॥ आविष्ट
 लागिर धरन राइने ॥ अति सुंदर होऊ नाम धराए ॥ ४॥ **अथ**
पलना के पद ॥ राग रामकली ॥ नंदको लाल वृजपाल ने
 रूले ॥ कुटिल अलकावली तिलक गोरोचना चरण ॥ अंगु
 ष्ठ माने किल कि फूले ॥ नैन अंजन रेख भुव ॥ भिरांम
 सुखिकंठ के हरि कि किनिकटि मूले ॥ कलश मनि नाथ
 नंदन नंद कुंवर देखि नागरी देह गेह ॥ २॥ **रामकली**
 रूलो पालने गोविंद ॥ दधि मया नवनीत काटोतुं मक
 आनंद कंद ॥ १॥ कनक कल ॥ नलित लटकन भ्रुकुटी म
 न के फंद ॥ निरखि छवि ॥ नुद्धि नुल्लां ऊगां ऊली लाछ
 ॥ २॥ देह धका दतियां सुख की निधियां हसन जव कछू
 मंद ॥ चतुर्भुज प्रभु जननी बलि गिरधर नगो कुल चंद ॥ ३॥
रामकली रूलो पालने बलि जांऊ ॥ स्याम सुंदर कमल
 लोचन निरखि अति सुख पांऊ ॥ अति उदार विलोकि
 आनन पीवत नाहि अघांऊ ॥ चुरकी देहे नचांऊ हरिको चू
 मि चूंमि उर लांऊ ॥ २॥ रुचिर बाल विनोदति होरो निकट
 बैठें गांऊ ॥ विविधि भांति विलोना लें लें गोविंद प्रभु को

॥ ज० पा० ॥ रिमांऊ ॥ ३ ॥ **रां मकली** लालमाईपालनें गुलायो ॥ सुरमुं
 ॥ १४३ ॥ निदेवकोटितेती सोकोतिकदेखन आयो ॥ जाको अं
 तनबलापावें शिवसनकादिकन पायो ॥ सो मुतदेख्यो
 नंदय सोदा गोदमेघालिखिलायो ॥ नाचतहमतक
 रतकोलाहलमन अभिलाखवदायो ॥ सरदास **कन**
 हितकारन नाना भेखवनायो ॥ ३४ ॥ **अथ दही के पर** ॥
राग आसावरी नंदज मेरे मन आनंद भूषे सुनि गोवर
 धन ते आयो ॥ तुं मारे पुत्र भयो हो सुनि के आते आनुर
 गिधायो ॥ वंदी जन आभिक्षक सुनि सुनि देसरे सते
 आयो ॥ एक पेहेले ही आस **रागी** बहुत दिन न के छाए
 ॥ ते पेहेरे के चनमनि **कुं** कताना नावसन अनूप ॥ मोइ
 मिले मारग में मां नो जात कइ के भूषा ॥ तुं मतो परम
 उदार नंदज जो मांग्यो सोही नो ॥ अंसो और को न त्रिभु
 वन में तुं **सरसा** को की नो ॥ कोटि देहु तो पत्पोर हंगो
 तुं मसरसा को की नो ॥ विनु देखे नहि जे हो ॥ नंदराय
 सुनि वीनती मेरी तबही विराभले ले हो ॥ ५ ॥ ही जे मोइ
 कृपा करि सोई जो हो आयो मांगन ॥ जसो माति सुत
 अपने पायन चलिखेलन आवे आंगन ॥ ६ ॥ मदन मोह ॥ १४३

नमैया कहि बोले यह सुनि के घर जांऊ ॥ हो तो निहारे घ
 र को टोही सरदास मेरो नांऊ ॥ **राग धना** ॥ ते पटि
 नंदरिजायो रे टोही ते पटि नंदरिजायो ॥ जसो माति सु
 तकी की रतिगाई सब दिन के मन भायो ॥ नंद सुवा
 गो अपने गरे को टोही को पेहेसयो ॥ ही नीधे नु **म**
 रि और धोरी और भंडार लुटायो ॥ २ ॥ दाहिनि को सोने
 के न पुरु गहे नो अगद गदायो ॥ रतन **रु** दितरव गवा
 रो गरे को जसु माति आपु पगयो ॥ ३ ॥ तेरे भले भयो ॥
 या सुत को ते भलो मंगल गाओ ॥ सरदास को सरव सु
 ही नो मंगल सुजस सुनाओ ॥ ४ ॥ **अथ बाललीला के प**
दा राग रां मकली मोखन तनक देरी माइ ॥ तनक क
 र परतनक रो **दा** भागत चरन चलाइ ॥ तनक भूमि प
 रतनक रिंगन नैति पकसो धाइ ॥ कंपि योगि रिसे सस
 को सिंधु अति अकुलाइ ॥ २ ॥ तनक मुख में हूध की द
 तियां बोलत रहे तुतराइ ॥ तनक से मन मोहना की ला
 गो मोइ बलाइ ॥ ३ ॥ तनक मांग्यो बहुत ही नो लीनो कं
 वल गाइ ॥ सरप्रभु की तनक चुटिया गुरुत माइ बनाइ

॥ वा ॥ ली ॥ ३॥ **राग रांम कली** ॥ मोइ हाधिमथ न देवलि गई जांउ
 ॥ १४२ ॥ बलि बलि बदन ऊपर छोडि मथ नीरई ॥ लालें देऊं गी
 नवनी तलों दा आर कित तुं मरई सुतहि विलोकि जसो
 मति प्रेम पुलकित भई ॥ लें उछंगल गाइ उर सों श्री
 प्रसन्न जीवित नई ॥ बाल के लिंगो पाल हरि की ॥ श्री कर
 न नित नई ॥ ३॥ **राग विलावला** ॥ नंद भवन को भूखन
 माई ॥ जसो दा को लाल वीर हल धार ॥ सो धार खन सदा
 सुरवदाई ॥ ईई कोई ई देव देवत को बल को बल अधिक
 क अधिकारी ॥ काल को काल ई सई सन को वरुन को व
 रुन महा वरुदाई ॥ मिथ को धन संतन को सरव सुम
 हें मावेर पुरां नन राई ॥ नंद रा सकी जीवनि गिरधर गो
 कुरु मंडन कुंवर फताई ॥ ३॥ **राग विला** ॥ लें होरी माचं
 दाले उगो ॥ यह तो दल मला तरु क जोरत के सैं के जुल
 हंगो ॥ के हा करों जल पुर भीतर को बाहिर चां पिग
 हंगो ॥ यह तो निपर निकर ही देषियत वर ज्यो हूं नव
 हंगो ॥ २॥ तुं मारो प्रगट प्रेम में जां न्यो बोरा यो नवर हूं
 गो ॥ सरस्यो मको कर गहिलां ऊस सितन ता पद हंगो
 ॥ ३॥ **अथ अन्न प्रास न के पदा राग धना श्री** ॥ १

अन्न प्रास न दिन नंद लाल को करत जसो हामाया ॥ ब्राह्मण
 देव पूजि कुल देवि बहु तद छि ना पाइ ॥ १॥ कुरें बजि माय पाटें
 वर दी नें भवन आपने आय ॥ मागद भाट सत मन माने सब
 हिन हर खवटाइ ॥ २॥ जो जिहि जाओ सोति हि पायो नंद रा
 य बहु दांनी ॥ भक्त हेत प्रगट जग जीवनि परमानंद गुं नगां
 नी ॥ ३॥ **राग धना श्री** ॥ यह मेरे लाल को अन्न प्रास न ॥
 भोजन दछि ना बहु तद छि जन को दे हो मनि प्रे प्रास न पाइ
 सभारे भरि पखवले हूं सब गुरजन अन्न प्रास न ॥ परमानं
 द अभिलाख जसो दा वेगि वट पद मास न ॥ २॥ **अथ कर**
रा वेध के पदा राग सारंग ॥ श्री या करण वेध दिन नी को
 गुर की भेली हाथ दिवाई ॥ मोरो चन कोरी को ॥ १॥ गुर स
 सिन छत्र वार बल पदु चो दिन मनि अति सुषदाई सो
 ने कंठ भूषन पेहेरा हाथ सो हारी पाई ॥ २॥ विप्र नंदान
 मान बहु की नों प्रजा करी गुरु देवा ॥ कल रास को यह वर
 दी जें पद पंकज की सेवा ॥ ३॥ **सा रा** ॥ सुत के कां न छेदि
 नंद रांनी ॥ सूची देखत भाजि चले हरि बहुरि पकरि के श्री
 नी ॥ छेदिकरन सब हिन पेहेरा यो मन में अति हर पांनी
 हसि दी नो ॥ सब वज्र पति प्रभु की मुनि मुनि ॥ तो तरी वांनी

॥ रा० व०

॥ १४३ ॥

अथ श्री राधाजी की वधाई के पद ॥ राग देवगंधार ॥ धरमां
ने ब्रखभांन गोपकें आनंदकी निधि आई ज ॥ धं निधं नि क
खिरोना की रतिकी जिनि यह कंन्या जाई ज ॥ १ ॥ यह लोक
परलोकर सात लक्ष सुनि नगाई ज ॥ सिंधु सुता गिरि
सुता सचीरति इन समांन कोई नांही ज ॥ २ ॥ आनंद सु
दित ज सोदा रां नी लाल की करो मगाई ज ॥ प्रभु कल्यांन
गिरधरजू की जोरी विधना भली बनाई ज ॥ ३ ॥ राग आ
सावरी ॥ जनम लियो हर खभांन गोपकें वेगें सव सिंध
हाररी ॥ लगन धरी बल न छत्र सो धे के गुरजन की यो
विचाररी ॥ १ ॥ कंचन मनि अंगु न आगे रहि बोलत दि
जवर वेंनरी ॥ कवडूंक सुधि पावत जु भवन मे पुत्र जनम
को चेंनरी ॥ २ ॥ इतने एक सषी आय धाय के जहां वेरे बल
गवालरी ॥ वेगि पुकारि कछो मुख आली प्रगटी सुता
लघु बालरी ॥ ३ ॥ तब हसितारी दे गुरजन के देखि जनम
विधि मानेरी ॥ हमारे कोटि पुत्र की आसा पूरन करी ब्र
खभांनेरी ॥ ४ ॥ कर भाजन अंगी जु गरग मुनि लगन न
छत्र बल सो धिरी ॥ भयो अचिर जग हरे धि परस्पर कहे
त सवन प्रति बोधरी ॥ ५ ॥ सुदि भां हो सुभ मास अष्टमी

१४२

अनुराधा के हेतरी ॥ प्रीति जोग बल बाल करन लगन ध
नुक बल वेधरी ॥ ६ ॥ प्रथम प्रहर दिन उदित दिवा कर सा
त्या सुषर सुजातरी ॥ नाम करन राधारति रंजन मार
सिक बहु भांतिरी ॥ ७ ॥ मुनि ब्रखभांन सुता जिनि मानो
एसी रमारतिलोलरी ॥ नाहिन और सुंदर ब्रभुवन में ॥
श्री राधा सम तो लरी ॥ ८ ॥ नाहिन सचीर मा गिरि जाचें
रोम रोम प्रतिगंनेरी ॥ नो विधि चारि पद रथ को फल
आयो सकल ग्रह ता नेरी ॥ ९ ॥ जव काहे न सुभ जोग हो
यगी सो भा कहें तन आवेरी ॥ देस और चारि लोक को
नायक सोई सुता वर पावेरी ॥ १० ॥ तब हसिक ह्यो डुबी सा
सवन सो मुनि मुत सुकल गु बालरी ॥ मेरे मन आयो य
हन हचें नंद मरे स्थिर लालरी ॥ ११ ॥ बंदावन रस रासिर
सिक मनि दंपति संपति मानेरी ॥ संकेत स्थल विहर
त होऊ सोई सकल यद् जानेरी ॥ १२ ॥ जुवति जूय माधि
रसिक सिरोमनि बल्लभ कुल नंद लालरी ॥ यह जोरी जु
ग जुगति होयगी श्री राधारवन गोपालरी ॥ १३ ॥ शिव
विरंचि जाकी जगिनि पावत सोई रास परस्पर लेतरी
कुंज नि कुंज की उत अरु त होऊ अगमनि गमर सले

तरी ॥ १४ ॥ इति विधिक होदि जरा जनु गति सो ग्याल मंड
 ली जानेरी ॥ जे जे कार करत सुर लोक निवा जत तरनि ॥
 सोनेरी ॥ १५ ॥ घर घर ते गोपी सब निकसी गावत मंगल
 वालरी ॥ पिकवें नी मगने नी मुंदरि चलत चाल मराल
 री ॥ १६ ॥ जोर सनेंद भवन में उमग्यो तातें इ नो होतरी ॥ हे
 मग जधे नुरतन मनिदा नो वंदी जन दिजवहुतरी ॥
 ॥ बसन विचित्र सवन पेहेरा सव सि सु देखन जाइ
 री ॥ मुख अवलोकि करे तचिर जी ॥ पुलकि पुलकि
 सधु पाइरी ॥ १७ ॥ सुर मुं निना गधर निजग मगे आग
 म अति मुख देतरी ॥ मसिप जन विडुं म सुत के हरि
 तीन को छी निवल लेतरी ॥ १८ ॥ सरदा स उरव सो निरं
 तरा धामा धोजरी ॥ यह छवि निरखि मुख पावत
 फुं नि डारत न तो री ॥ १९ ॥ राग देव गंधार ॥ आ
 जुरावलि ॥ जे जे कार ॥ प्रगट भई हरि भांन गोप के
 श्री राधा अवतार ॥ १ ॥ भूषन वसन सु सो भित अंग अ
 ग कंठ मनोहर हार ॥ हाटक जन वदनार विंद की छवि
 डुं हंदि सउ जिया ॥ २ ॥ सब सषी यन मिलि मिलि दारें
 आई करली एक चन थाल ॥ निरमित जोटवनी गिरध

रकी रां मरा सब लिहार ॥ ३ ॥ राग देव गंधार ॥ प्रगटी नाग
 रिरूप निधान ॥ देखि देखि वरुत हे परस्पर नहि त्रिभुवन
 में आन ॥ ४ ॥ उपमां को जे जे कहियत हैं ते जु भग निरमान
 कुं भन रास लाल गिरधर को जोरी सहज समान ॥ राग वि
 लावला ॥ आजु वरसां ने वजति वधाई ॥ धन्य कृष्णि वाही
 जिनि यह कुं वरि सुलखि न जाई ॥ निरखि निरखि फुली
 गोपी जन भई हमारी भाई ॥ प्रख सुकृति विचारत अपनो
 आन आसनिधि पाई ॥ दोले गरुड सुभघरी विचारत
 सुचीर हो ओर गाई ॥ अतिलहे जो हरि भांन गोप को भा
 गिदि साचलि आई ॥ ५ ॥ नम प्रेम सुलखि न कहियत सो
 यह वेदन गाई ॥ सरदा सखां मिहुं ते अधिकति हूं लोक
 वडाई ॥ ६ ॥ राग सारंग ॥ श्री राधा जू को जन म सुनो मे
 री भाई ॥ सकल सिंगार ची वृज गोपी घर घर वजति वधा
 ई ॥ अतिस कुं मारि घरी सुभलखि न कीरति कंन्या जाई
 परमानंद करत न्योछा बरि घर वात लुटाई ॥ ७ ॥ राग नटा ॥
 राधा जू सो भा प्रगट भई ॥ हंदावन गो कुल गली यन में सु
 ख की लता छई ॥ प्रतिपद गोपुर कुं जनि में उपमां उपजा

नई कुंभनरासप्रभु गिरधर आवेगे पेहेले पढेई ॥
अथ श्री राधाजी की दाधारी को पद ॥ राग मारु मेहे
रिजू जाचन तुं मपे आयो ॥ देहो वधाई मन की भाईति
रुं लोक जमुखायो ॥ कीरति कृषिप्रगरी श्री राधासुं
निमुं निमंगल गायो ॥ कृष्णदासदादी अपने को सो होत
भांति पेहेरायो ॥ १ ॥ अथ श्री राधाजी को पद नो ॥
राग सारंग ॥ लाडिली सुरंग पालने फूले ॥ कीरति वेटी रु
लावत हरषत आनंद मन मे फूले ॥ सुरग विलोना भां
ति भांतिके प्रमुदित गोद विलोने ॥ देखि दोखि मुख कां
ति सलोनी देदति यांदर सलोनी ॥ प्रमुदित गावति अति
हरखावति उपमां को नही आन ॥ रूप अंग सब ब्रजप
तिकी जोरी परम सुखीन ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ प्यारी लाडि
ली सुरंग पालने फूले ॥ राग महेल रचि रे विधाता निर
खि निरखि सने फूले ॥ नवनिधिसिधिजाकी आग्याका
रिनि सोई जोई कीरति वाला ॥ सरस सरोवरि भांन भवन मे
प्रगदी हे कुलपाला ॥ ३ ॥ आजु उदे सव ब्रज मंडल को गो
रीरसिक गोपाला ॥ कृष्णदास प्रभु अति आनंदे जोरी प
रमरसाला ॥ ४ ॥ अथ दान के पद ॥ राग देवगंधारा ॥

रंचक चाखन देरी द्यो ॥ प्रभु तस्वाद श्रवन सुनि मोपेना
हित परतर द्यो ॥ १ ॥ ज्यो ज्यो कर अंबुज कुचटां पतित्यो त्यो म
रमल द्यो ॥ नंद कुं मार छविलो तोटा अचरार वकि गद्यो ॥ २ ॥
नवातन चारव्यो चाहत हो सैतिन जात वद्यो ॥ हरि हर करत
दास परमानंद मरमैं बहु तस द्यो ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ ग्वा
लिनि मीठी तेरी छाछि ॥ कदा दूध मे मे लिज माये सांची क
हो मेरी बाछ ॥ १ ॥ ओरे भांति चिते वो तेरो भो हवलत है आछ
एमें टकरु कक वरुं न देर द्यो तजुर ही कछ काछ ॥ २ ॥ रासि
कां नू कुच करगहि परमत न जु पति हे पाछि ॥ परमानंद ग
लि आलिं गी गोप वध हरि कांछि ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ मेरी
हंदावन में दधिलरी ॥ कहुं मेरो हार कहुं न कवे सरिक हं मे
तीन की लरटरी ॥ सटुकी फोरि दद्या मेरो खायो कंचुकी
कसरु क मोरे निटरी ॥ सरदास प्रभु ही वक नैयां सरव सुदे
ग्वालिनि तव छरी ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ नग हो कां नू को म
ल मेरी वहियां ॥ सुंदर म्यां मछ वीलो रोरा हो नही आं ऊपाव
न महीयां ॥ होवलि जां उचरन कमलन की जात हती अ
पने घर महीयां ॥ परमानंद काहि निरवो कछु वेगे नेक करम
की छैयां ॥ ५ ॥ अथ श्री रामनजी के पद ॥ राग विलावल

राजा एक पंडित पोरितिहारी श्रीयों ॥ चात्पो वेद परत मु
ख आग्रह वामन हें वपुधारी ॥ १ ॥ अपसुपसय शुभाषा
बोलत सरन जोतिमभारी ॥ नगरन में नरनारी मोहेश्वर
गति स्वस्मिहारी ॥ २ ॥ सुनिकरनाद चले बलिराजा आहु
तिय गय विमारी ॥ देखि स्वरूप सकल कृष्ण को दीना भेट
जुहारी ॥ ३ ॥ चलो विप्र जहां जग्य वेदी वरोत करों महुहारी
जो मांगो सो देउतुरत ही हीरारत न भंगारी ॥ ४ ॥ रुरुरुरा
जा रुन कहो येइ वन लागे भारी ॥ आध पेंड धरती दे मो
कों जहां रचो धर्म सारी ॥ ५ ॥ शुक्र कहें सुनि हो बलिराजा भं
मिको दान निवारी ॥ एतो को ऊनि प्रने होई आछलन मु
रारी ॥ ६ ॥ कहा करों जो आपुन मांगें जडुपति भए भिरगारी
लीयो उदिक चरित्र जव देखो विप्र न देख सारी ॥ ७ ॥ जे जे
कार भयो भुवना पति नीनि पेंड भई सारी ॥ आध पेंड धरती
दे मो कंके कल चलो मत हारी ॥ ८ ॥ हम को सत छांडि हें जग
त गुरुना पहरें हर मारी ॥ सरस बलहसि सरव मुदी नो
पायो राजपतारी ॥ ९ ॥ ॥ राग सारंग ॥ बलिके दारें गढ़े
वां भन ॥ अवण सुनत ही आनंद उपज्यो कछो भीतरें प्र
वन ॥ १० ॥ चरन धोइ चरणोदिक लीनो मांगि विप्र मन भाव
न ॥ ११ ॥ निपेंड धरती हो मांगो परम कुटी एक छावन ॥ १२ ॥

माको विप्र कहातुं ममांग्यो देहु हीरारत न बहु गावन ॥ प
र मानें प्रभु वचन न पल्यो लागे पीठिन पावन ॥ १३ ॥
अथ सोही के पदा ॥ राग गौरी ॥ स्याम सनेही गाईये ता
ते हंदावन रज पाईये ॥ १४ ॥ भोमिनी ताकी भोमती हो कुं
जन कुंजन कोलि ॥ तरुत मालहि चरुही मोनो लसत क
नक की बेलि हो ॥ १५ ॥ महामोहनी मोहलीयो हो राखि ला
सहुलास ॥ कुच कवल निरंजित रस मानो ललची धोमे
न मराल हो ॥ १६ ॥ मेन सें न सरत न भेंद्यो देसन बैद्यो कल
गोन ॥ प्रजन फंद नि कुंवरि कुरंग नि बंधो भुव अटल
क मान हो ॥ १७ ॥ नक वेसरि वन छलीगी हो चित चंचल म
न मीन ॥ बैद्यो अधर सुधा पान चकोर की ए आधीन
हो ॥ १८ ॥ अंग अंगर सरस भंगे हो मग न भए हरि नाह व्या
स स्वामिनी मुख तरी पिय संग सिंधु प्रवाह हो ॥ १९ ॥
राग गौरी ॥ कीरति कुल में डन गाईये वख भोन नृपति
की बाल हो ॥ कंचन तन सोहे मोहे उर पेहें मुक्ता माल हो
॥ २० ॥ सषा वंद सव आ यजुरी वख भोन गोप के दार हो ॥ वीन
त फूल चरी वन राधे न वसत साजि सिंगार हो ॥ २१ ॥ यह सुं
नि कीरति जह सिके प्यारी को की मोहे सिंगार कवरी
कुसुम गुहीर चिमानो उडगन की उनहारि हो ॥ २२ ॥ सीस

सोनी
१४८

फूल अर्धचंद्रविराजत सोभा कही यन जाइ कोरि चं
दमुख ऊपर वारों को मर सो मुराइ हो ॥ वां कविरा
जिर हे भकुटी पर कुं खुरिला करन न पास ॥ यों खं पटा
पर हे दोऊ जन नैन हर सकी आस हो ॥ ५ ॥ करन फूल
रुं मक और बेंदरी लटक न बेंदरी भात ॥ न कवे सरिमो
ती अरु सो हे लई लटनो ना विमाल हो ॥ ६ ॥ पुखरितं
बोल अधर अरु नाई रसन वसन अरि सारा ॥ चिबु
कवि इमधु कुर सुत मानों वैदे आसन मार हो ॥ ७ ॥
अंजन ऊपर खंजन वारों नैन चंपलता मीन ॥ कीर
ति जूझ विनिरा विनिरा धि के ही ठरि बोना कीन हो
८ ॥ गरें वांधि ति मनी इलरी चंपक ली उर हार ॥ वाजे
बंद पछेली चूरी कंचन गजरा चारु हो ॥ ९ ॥ यों हो चार
तन चोक और पुंदरी नख भूषन छवि देत ॥ श्री कर
कमल विराजत मानों उडगन चंद्र समेत हो ॥ १० ॥ छु
द्रघंटिको कटित टराजत जे हर नू पुरुपाइ ॥ अगुरी
न विधि या अनवर सो हे उपमा कही यन जाइ हो
११ ॥ हरेक सभ को ले हेगा सो हे कंचुकी के सरि अं
ग ॥ सारी मुरंग मुही हे मानों गुलाबां सके रंग हो ॥
१२ ॥ करि सिंगार कहे कीरति जू जाउल डेंती इनके

१४८

सोनी ॥ अली जय मे चली परस्पर फूल नडलिया हा
थ हो ॥ १३ ॥ चलत चाल मराल बाल श्री राधा जू सषीय
न मोर ॥ बीनत फूल न जमुना फूल न खेलत सोनी सां
रु हो ॥ १४ ॥ लतारें धरेषत मन मोहन इष्टि परीष्ट जवा
ल ॥ त्रियारूप की यो हेत वही आय मिलेत तत काल हो
१५ ॥ छवि निरघत हरव भांन डुलारी बहुत करी मनु हो
१६ ॥ बीनत फूल अकेली वन मे यह अति मकुमारि हो
१७ ॥ कौन गोम वसति हे सुंदरि करि तिहारो नाम ॥ अ
जु अवार भई हे प्यारी चलो हार धाम हो ॥ १८ ॥ नंद
गोम वसति हो राधे सां वल भरो नांम ॥ सोनी मिस
आई हो मावन पूजे सन के काम हो ॥ १९ ॥ सो ने जुही
चवेली चंपो राय वेलि और वेलि ॥ गुलाबां स की गें
हली ये कर कर परस्पर खेल हो ॥ २० ॥ केलिक नेरि के
तुकी निवारों सेवती मरा गुलाब ॥ गुलतुरा और स
हा सुहागिनि फूलन की भरी छाव हो ॥ २१ ॥ तलिता
चंपक लता विसाखा स्यामा भांमा जै हो ॥ चंद्र भगाच
तुरा चंद्रा वलिरांमा को माते हो ॥ २२ ॥ देरि देरि सब
कहेत सषीन सो चलो भट्ट घर जाइ ॥ स्यामा जू और
न खेल सषी हो ऊग हे परस्पर बां हो ॥ २३ ॥ सुधा सिं

सोफी
१४९

धुमध्य चंद्रवधामिलिकरतकेलिवहुभाइ॥निराषि
देवडुंडुभीवजाईफलनडाहिकराईहो॥२३॥फलगे
रकरलीएसवगावतसांफीकेगीत॥गजगतिचा
लचलातिवृजसुंदरिवाहीपरस्परप्रीतहो॥२४॥चहुं
दिसतेसवआयजुरीवृखभांननपतिदरवारकीर
तिजुआरतीकरतहेंराईलोनउतारहो॥२५॥विह
सिकहेपरमभांमतीमैयाललीअसोयहकोंन
प्यारीकह्योनंदगांमवसतिहेंखेनअंईभोनहो
२६॥चोवाचंदनअगरअरगसांमगमदकीकरिगा
राकांमधेनुकेगोवरलेंकेसांफीधरतिसवारहो॥
२७॥धूपरीपकरिभोगधसोभआरतीकरीवनाइ
सांगंतसीखसवेअवालाहाथजोरिसिरनाइहो
२८॥आरुकतेअजुमिलिघांईआराधाजुसाथ
हो॥कीरतिजुमोकरतिवीनतीपरसोअपनेहाथ
हो॥२९॥आरुकरिघरगईसहेलीरह्योखेलकोरं
ग॥कमलसेजपरपोहोउहोजसांवलराधासंग
हो॥३०॥कहाकहोकहूकहेतनआवेप्रभूकोय
हीस्वरूप॥त्रियावसनललिताहेरीयोप्रगटकी
योनिजरूपहो॥३१॥वरनोंकहाजथामतिमेरी १४९

रसनाएकवनाइ॥हरीदासप्रभूकीयहसोभानिरष
तमननअघाइहो॥३२॥२॥अथकरखाकेपदा॥राग
मार्ग॥होलछिमनसीताकोनेहरी॥यहवारीवेरिनभ
ईमोकोंकंचनमगजुछरी॥जोपेसीताहोयमहीमें
जांकतिहारवरी॥सनीमहीदेखिरघुनंदनआवतने
नभरी॥२॥एकडुपहतोपिताजसरथकोइजेसीयहरी
सूरदासप्रभूकहेतभ्रातसांवतमेंविपुलपरी॥३॥
॥रागमार्ग॥आजुरघुवीरकोइतथीयो॥जारिलंका
सकलमारिराखसवहुसीधुधिलेंकुसलफिरि
सिधायो॥१॥कहेतिमंदोहरीसुनहुदशकंधपीयबडो
अपमोनकरिगयोतेरो॥अजहमनसमजिकेंमूढ
मिलिरांमकोंसरमतिमंदकह्योमानिमेरो॥२॥
अथरसदुराकेपदा॥रागसारंग॥आजुदशहराशुभ
दिननीकोपायतोपूजोहोगोपाल॥वजरांनीवजरा
जकुंवरकंकरतसिंगारपरमरसाल॥वहेनिसहो
जाहरषितमनमेगावतमंगललाईथाल॥तिलक
करतजवारासाथेंआरतीवारतिकहेचिरंजीबोलाल
२॥तववजराजेंअस्वसिंगारेयेंतापरचदेगिरधरलाल

॥दृश०

॥१५०॥

रसिकप्रीतमपीयचलेकुहावतजहावेगीहपभांनकी
वाल॥३॥॥रागसारंगा॥जवारेपेहेरेआगोवर्द्धनना
था॥सुंदरमुषनिरषतमुषउपजतहजजनकीरामना
था॥स्वेतजरीतहापागलटकिरहीकलेगीतामें
लाल॥तनमुखकोवागोअतिराजतकुंडलकलकें
रसाल॥२॥अंगअंगछविकहालौंवरनोनाहिनव
रन्योजात॥चतुर्भुजप्रभृगिरधरखविनिरषतआ
नंदरनसमात॥३॥॥अथरासकेपदा॥रागमा
लवा॥मोहननंदरायकुंमार॥अंगटबलनिकुंजना
इकभक्तहितअवतारा॥अथमचरनसरोजबंदो
स्यामघनगोपाल॥अंगकुंडलगंडमंडितचारु
नेनविसाल॥२॥अंगलिरांमसहितविनोदलीलासे
ससंकरहेत॥होसपरमानंदप्रभुहरिनिगमबोल
तनेत॥३॥॥रागमालवा॥साजैनदवरभेषगोपाल
मधुरवेनुसुसब्दउघटितततथेईततथेईताल॥
तरनितनयातीरमरकतमनिजुस्यामनमाल॥ब्र
जकीनारिसमूहमंडलवनीकंचनमाल॥२॥रसरा
ससंगतिनिरखिउपतितजीपछिमचाल॥चतु

॥१५०॥

भुजप्रभुदेवगनमनहस्योगिरधरलाल॥३॥॥रागमा
लवा॥मदनगोपालराममंडलमेंमालवरागरसभ
रोगावे॥अवघटतोनबंधानसप्रसुरमधुरमधुर
मुरलिकावजावे॥१॥निर्ततसुलपलेतनौतनगति
बहुविधिरस्तकभेदरिखावे॥उघटतसब्द॥अथे
ईततथेईजुवतीहंदमनमोखतावे॥२॥अथचंद्र
मोहेखगमगयशुप्रतिष्ठिनुअमितधनागतिपा
वे॥चतुर्भुजप्रभृगिरधरनटनागरसुरनरसुंनिम
नगतिविसरावे॥३॥॥रागमालवे॥चंद्रगोविंदगो
पीतारागनवन्योरासमेंवर्द्धवारी॥सुप्रतापरंजित
हंदावननवलजुवती॥अनमुखकारी॥१॥कमलनेन
कमनीयमनोहरमध्यवतीगोकुलनारी॥हस्तक
मलवरगलितकुसुमचयनिर्तमानप्रीतमप्यारी॥२॥
रसमयरसिकरसिकनीभांमिनिअतिरसालवने
विहारी॥कल्लहासप्रभृरसिकमुकरमनिरसिकला
लगिरधारि॥३॥॥रागमालवः॥ततथेईरास
मंडलमेंवनेमाधोपीयकेसंगप्रीतमप्यारी॥गाव
तसरसमुधंगमिलावतचपलकुटिलभुवअनिया

॥ रास ७ ॥ १ ॥ मालवराग अलापत गावत लेत उरप नागरनारी
 ॥ १५१ ॥ प्यारी के संग वेन वजावत सुघर राय गिरधर धारी
 २ ॥ कृष्णदास प्रभु सो भग सी वास वनु धति न मे सकुमा
 री अरु त प्रगटित भूतल के लिकलार समनु हारी
 ३ ॥ अथ धन तेरसि के पदा ॥ राग देव गंधार ॥ अ
 जु माई धन धोवति नंदरां नी ॥ कार्तिक वदिते रसि सु
 भदिन अति बोलत मधुरी वां नी ॥ १ ॥ उदिते रुवाइव
 सन पेहे राए मन में आनंद आं नी ॥ श्री विठल गिरध
 र नालक कुंदे खत हनु सिया नी ॥ २ ॥ रा. देव गंधार
 प्यारी अपनो धन नु सगरी वारं वार दोखि ने न नि सों
 लें रुंदे में धारो ॥ रुचि को मरस सिंगारत पीय को आ
 भूषन बहु सो हो ॥ राग मनिराखि दिवारी को मन दारि
 केश को मोहो ॥ २ ॥ अथ रूप चौदसि के पदा ॥ राग
 देव गंधार ॥ हात बलिकुं वर कुं वर गिरधारी ॥ जसो म
 तितिल के करति मुख चुं वति आरति नवल उतारी ॥
 आनंद राय और गोप सहित सब नंदरां नी हज प्यारी ॥
 जल सो घोरिके सरिक स्तरी सुभग सी सनेहारी ॥ २ ॥
 बहुरि करत सिंगार सबे मिलि रहै त सबे जु निहारी ॥

चंदा बलि व्रज मंगल रस भरि श्री वृख भोन डुलारी ॥ ३ ॥
 मन भाए पकवोन जिमावति जात सबे बलिहारी ॥ श्री
 विठल गिरधर न सकल व्रज मां नत छोटी दिवारी ॥ ४ ॥
 राग सारंग ॥ यह दिवारी वरस दिवारी नित नित तुं म
 को आवो ॥ नंद राय और जसोदरां नी अति रस प्रह
 पावो ॥ पेहेलें न्हायतिल कगो रोचन देवा पितर मना
 को ॥ श्री विठल दोऊ दोर नलें कें गोधन पूजन आवो २२
 अथ दीप मालिका के पदा ॥ राग सारंग ॥ आजु रिपति
 दिव्य दीप मालिका माई गिरधर सिंघ दारे कै देरत धो
 री धूं मरि हो राई ॥ चुचकारत मुख भरत अंक में फेरि पि
 छोटी धाई ॥ कारी काज अनमजी गी खेलन को अकुल
 दी ॥ रुंकि रुंकि सब दिनुत न चितवत नेचु की लगत सु
 हाई ॥ चतुर्भुज अंगिरधर नालक की वानिक वरनी न
 जाई ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ आजु अमावस दीप मालिका
 बड़ी परवनी हे गोपाल ॥ घर घर गोपी मंगल गावे सुरभी
 वृख भसिंगारो लाल ॥ कहैत जसोदा सुनो मन मोह
 न अपने तात की आग्या लेहा ॥ वारहु दीप बहुत करि कें
 घृत करि उजियारो अपने गेहा ॥ २ ॥ हसि व्रज नाथ कहैत

॥ ही ० ॥ माता सोंधोरी धेनु सिंगारो जाइ ॥ परमानंद हास को म
 ॥ १५२ ॥ कुरजाहि भावत है धोरी गाइ ॥ ३२ ॥ अथ हरी के प
 राग को नरो ॥ मानत परवदि वारी को मुख हठरी वैठे न
 रुकुं मार ॥ मंगल वाजे वाजत चहुं दिस भीरव दुत अ
 ति आंगन धारा ॥ कुंवरि राधिकान बलवधु सुकरि
 आई जु रुचिर सिंगार ॥ सोंधो भीनी कंचु की मारी उर
 पे हेरे फूलन के हार ॥ २ ॥ पेहेले सो दा लेहु हम ही पे तव
 ली जो दाऊ पे जाय ॥ नीकें देही सहे न खेहे ए से कहे
 तला ल मुसिकाय ॥ ३ ॥ हसि हसि जात राइ नंदरां
 नीह सत है सभो न सव को पगु बाल ॥ चुंबत वदन
 अहो ए वाते का पे सो खेहो नंद लाल ॥ ४ ॥ रुगरो क
 रत भरत आनंद को चंद्रावलि ब्रज मंगल बाल ॥ श्री
 विठल गिरधर नलाल सो रंग करत सव गोकुल
 बाल ॥ ५ ॥ राग को नरो ॥ हठरी वैठे श्री गोपाल
 रतन जाटित की हठरी वनी है मोतिन कालारि पर
 मर साल ॥ ६ ॥ टाटर कुली और कुलैया भरि भरि
 धरे पकवां नर साल ॥ पांन फूल और सोंधे सहित
 सव वांटत है नंद के लाल ॥ ७ ॥ रोमावलि प्रेमावलि १५२

ललित धंधावलि ब्रज मंगल बाल ॥ चलो सषीज
 हो पैठल गीहें वो टत है दे गोकुल के पाल ॥ ८ ॥ सव सुं
 दरि घर घर ते आई निरघत नैन विमाल ॥ गोविंद प्रभ
 तव चित चो सो तव वधी प्रेम की पाल ॥ ९ ॥ अथ ह
 री के पद ॥ राग को नरो ॥ ही पदां नंदे स्यां मम नो
 हर सव गायन के कांन जगावत ॥ गांग बालाई धूम
 रि धोरी ऊंचे लेने नो मबुलावत ॥ १० ॥ हिसचे तभो
 र खेलन को नें कबुला ए होरी आवत ॥ सन मुख जा
 पकू कमारत है मुख पर पे विपि छोड़ी धावत ॥ ११ ॥
 मुदित गुपाल गवाल सधु मिलि के ताको वछराता
 हिमिलावत ॥ चतुर्भुज प्रभ गिरिधर नडाट संविह
 सिगावत करत लव जावत ॥ १२ ॥ राग को ० लाल
 माई वैठे राजत हठरी ॥ रां नीज साजि सवारि धरे सव
 रं मकल के वदरी ॥ लडुवा गूं माप कवांन बहुत करि
 भरि भरि थार धरे बहु मररी ॥ ग्रह ग्रह ते गोपी सव आं
 ई भई भीरत हां वररी ॥ २ ॥ एहो तो लेहे दुस वहीन को नो
 म अटल करि अदरी ॥ रसिक प्रभ के नैन निलागी ब्र
 ख भांन कुंवरि की रदरी ॥ ३ ॥ अथ श्री गोवर्द्धन

॥ गो० पू० जाके पद राग सारंग ॥ वड्डेन को आगे दे गिरधर श्री
 ॥ १५३ ॥ गोवर्द्धन पूजन आवत ॥ मानसी गंगा जल रुवाय के
 पाछे इध धोरी को नावत ॥ १ ॥ बहुरि पषारि अरग जाचर
 चत धूप ही पबहु भोग धरावत ॥ देवी रा आरती करत हे
 ब्रज भा मिनि मिलि मंगल गावत ॥ २ ॥ देरि ग्वाल भाज
 न भरि दे के पीठिया पिसिरे चवधावत ॥ चतुर्भुज प्रभु
 गिरिधर ब्रज इह विधि जु गजु गराज करो मन भावत
 ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ गुर के गंरा प्रभु मुहारी ॥ गोधन पू
 जत ब्रज की नारी ॥ घर घर गो मय प्रतिमा धारी ॥ वा
 जतरु चिर पषाव जयारी ॥ गोदली ए मंगल गुन
 गावति ॥ बाल रुख को पायल गावति ॥ ४ ॥ हरद्वारो
 चन के टी के ॥ इह विधि मुरपुर लाग भत फी के ॥ ५ ॥ अ
 रुन पीतरंग गाइ सिंगारी ॥ खेलत गो पदेत किल का
 री ॥ ६ ॥ हरी सा प्रभु कुंज विहारी ॥ सुख मानत त्योहार
 दिवारी ॥ ७ ॥ राग ॥ हमारी कां रुक हे सोई की
 जे ॥ आबो सिमिदिस कल ब्रज वासी परवत को बलि
 ही ज ॥ मधु मेवा पकवां न मिठाई घर सविंजन की
 जे ॥ आस करन प्रभु मोहन नागर पन्यो पछावरि पजे ॥ १५३
 २ ३

अथ गाइ खिलाय वे के पद ॥ राग सारंग ॥ खेलन को
 धोरी अकुलाती ॥ डार मे लिसन मुख आतुर के स्याम
 सुंदर की सुनि मडुवां नी ॥ १ ॥ वड्डे गो पथ कित भये ग
 टय ह ॥ बलौं देखिन ही कहानी ॥ नां चत गाइ भई नौ
 तन ब्रज वर सो वर सकुसल यह जोनी ॥ २ ॥ नंद कुंभार
 निवारि मारि मुख जे जे शब्द कहैत कल गंभी ॥ चतु
 र्भुज प्रभु गिरि राज धरन की सारंग हो सीर जधोनी
 ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ खेलाव हो खेला गो गबुलां ईधूं म
 रिधोरी ॥ वछरा पर उपरें ना फेरत डार मे लिकें दोरी ॥ ४ ॥
 आपु गुपाल कूक मभत हे गो सुत को भरि कोरी ॥ धे
 धें करत लकुट कर लीने मुख पर मारि पिछोरी ॥ ५ ॥
 आनंद मुदित गोपाल गवाल सब देखि करत इक गोरी
 चतुर्भुज प्रभु गिरिधर ब्रज इह मुख जु गजु गराज क
 रोरी ॥ ६ ॥ अथ अंन कूट के पद ॥ राग बिनावली ॥ गो
 कुल की कुल देवता प्यारो गिरधर लाल ॥ कमल ने न
 घन सां वरो वपु बां ह विमाल ॥ वेगि करो मेरे कहे प
 कवां नरमाल ॥ बलि वम घवावल लेत हे करि करि
 गत गाल ॥ ७ ॥ इन के ही एवादि हे गैया वछवाल ॥ स

॥ अ० कू० ॥ गमिलिके भोजन करे जे से पशुपाल ॥ ३ ॥ गिरिगोवर्द्धन
 ॥ १५४ ॥ पूजिये जीव न गोपाल ॥ सरस झर पतरहे जाते यम
 काल ॥ ४ ॥ ॥ राग विलावला ॥ पूजा विधि गिरिराज की नंद
 लालवतावे ॥ नर नारी सबहुलसिके पूजे मुख पाश ॥
 खीर बां ड छत भात ले पकवां न बनाय ॥ कुंडवा रो मरिले
 चली सुभ मंगल गाय ॥ २ ॥ ले रोहनी कर लह रईवाल
 हि आय ॥ हसि हसि देव रुवावही डहि डहि सब गाय
 ॥ गाय विलावों आपनी कूके फिल काय ॥ श्री वि
 हलगिरधर नकी बलिवलि जय ॥ ४ ॥ ॥ विलावला ॥
 पूजा विधि नंद गिरिराज की नंद लालवतावे ॥ कुंडन कुं
 डन गोपिका मिलि के मेल गावे ॥ मान सी गंगा जल
 रुवाय के इध धो को नावे ॥ विविध वसन पेहेराय
 के चंदन माला पहेंवें ॥ २ ॥ तिलक की ये वीरा दीये माला पे
 हेरावे ॥ फिर गिरिधर भोजन की यो माला पेहेरावे ॥ फि
 र गिरिधर भोजन की यो मुख मूर दिखावे ॥ ३ ॥ ॥ वि
 लावल ॥ अपने अपने दो लकहे न अनया सियां ॥ ४ ॥ स
 रद कहूनि सजानि दीप मालिका जु आई गोपन मन
 आनंद फिरत उन्मद अधिकाई ॥ ऐपन था पेरा नि

वेधरघर मंगल चार ॥ सात वरस को सांवरो हो खेत न
 नंदुबार ॥ क० ॥ १ ॥ वेदि नंद उप नंद बो लिख स्वभां न प
 ढाए ॥ सुरपति पूजा जानित हां बलि गोधिंद आए ॥ वा
 रवार हाहा करे कहि वावा एक वात ॥ घर घर गोरस सं
 चिये हो को नंदेव को जान ॥ क० ॥ २ ॥ कां कृति हारी पुश
 ल जां नि एक मंत्र उ पे हो ॥ खर सविंजन सा जि भोग
 सुरपति को दे हो ॥ नंद क ह्यो चुचकारि दे जो रामो दर ॥
 सो ॥ वरस द्यो सको द्यो सहे हो म हा म हो छव हो ॥ क०
 ३ ॥ त वहसि बोले लाल मंत्र उ ह्यो फिरि को नो ॥ आ
 दि पुरुष निज जानि रें नि सपनो मोहिरी नो ॥ सब दे
 वन को देवता गिरिगोवर्द्धन राज ॥ ताहि भोग कि नि
 दी जिये हो सुरपति को कहा काज ॥ क० ॥ ४ ॥ बदि हे गो
 धन वंद इध दधिको कहा लेखो ॥ यह पर चो जिय जां ॥
 निनेन अपने कि नि देखो ॥ तुं मरे वत बलिखाय गो मो
 हो मांग्यो फल दे ॥ गोप कुसल जो चाहिये हो गिरिगो
 वर्द्धन मे ॥ क० ॥ ५ ॥ गोपन की यो विचार सब नो मि लि
 सक रजु साजे ॥ बहु विधिक रिप कवां न चले जहां बाज
 नवाजे ॥ एक वन ही वन को चले एक नंदी सुरभीर ॥ एक

॥ अन्त ॥ नपेंडोपावही होउ मडोफिरत अहीर। क० ६॥ एकउवरकें
॥ १५५ ॥ चले एकवनहीवनछाए। एकगाबेंगुंनगोविंदप्रेमउम
 गेनसमाए। सवाहिनकेमनसांवरोदेखियतश्रवन
 मंरार। कोतिकभूलेंदेवताहोआएलोकविसारिक०
 ७॥ ब्रजचोरासीकोसपरेगोपनकेडेरा। लांवेचोवन
 कोसजहांब्रजवासवसेरा। गोपनकोसागरभयोगि
 रिभयोमदराचाररतनभईसवगोविकाहोकांरूवि
 लोवनहारा। क० ८॥ तवहरिकोलेविप्रजग्यप्रारंभ
 नकीनो। सुरपतिप्रजामेदिगजगोबर्द्धनदीनो। देव
 दिवारीसांमहीसवमिलिप्रजनजांश। नंदप्रतितजो
 चाहियेहोतुंमदेसुखबलिखाइ। क० ९॥ प्रथमही
 दूधरूवायबहुरंगगाजलहास्यो। बडोदेवताजो
 निकान्कोमनोविचास्यो। जेंसैंहेगिरिराजभज
 जेंसो। अनकोकोट। मगनभएपूजाकरेहोनरना
 रीबडछोट। क० १०॥ बहुविधिविंजनकीयेकहालौनां
 सवधानो। भयोभातकोकोट। ओटगिरिराजविपा
 नो। वराविराजेंभातपेंचंदेपरतरसोइ। जग्यपुरुष
 भोजनकरेहोसवदेवनसुखहोइ। क० ११॥ सहस्रभु

जाउरधरेंकरेंभोजनअधिकाई। नखसिखलेंउन
 हारिमनोइसरोककाई। ललिताराधासोंकरेंतेरे
 रुदयसमाइ। गहेंअंगुरीयानंदकीहोदोरापूजासा
 इक० १२॥ पातदुमालोवन्योकंवमोतीनकीमाल।
 सुंदरसुभगसरीररुलमलेनेंनविसाला। स्याम
 कासोभागिरिभयोगिरिकीसोभास्यासो। जेंसो
 पर्वतभातकोहोदिंगभैयावलिरांमक० १३॥ जेंसो
 कंचनपुरीदिव्यरतनसोंछाई। बलिदीनीहीप्रात
 छाहवलिपूरवआई। वररोलाखभांनकीरहीवि
 लोमनहार। लकीवलिउतदेवताहोलीनीभुजापसा
 रिक० १४॥ सवसांमद्योअरपिगोपगोपिनकरजोरें
 अगिनितकीनेसादकहावरनोमतिधोरें। इहिवि
 धिपूजाकीजियेकद्योसवनसमकाइ। स्यामकद्यो
 मूरदाससोमेरीलीलासरसवनाइ। क० १५॥ ४॥ राग
 जोरी॥ यहलीलासवकरतककाईइतजेंवतगिरिगो
 बर्द्धनसंगउतरोधामोप्रीतिलगाई। इतगोपिनसों
 कहेतजिमाबहुउतआपुनजेंवतमनभाई। आगेध
 रेदेहोरसविंजनवररोलाकोलीयोमगाई। २॥ अमर

॥ ३५० ॥

॥ १५६ ॥

विमानचढेसवदेखतजैजैधुनिकहिसुवननवरवाई
सरस्योमसवकेसुखदाताभक्तहेतअवतारसदाई
३५॥ **अथइंद्रकोपकेपदा। रागविलावला।** यातेजि
यभावेसदागोवर्द्धनधारी। इंद्रकोपतैनेंदकाअपरा
निवारी। १। जोदेवताआराधियेसोहरिकोभित्तारी।
मांगिदेइकितसेइयेविगरेअपकारी। २। इमोमनके
क्रोधतेडोपदीउवारी। परमानंदप्रभुसंघरीभक्तन
हितकारी। ३। १॥ **रागविलावला।** बलिहारीगोपालकी
गोवर्द्धनधार्यो। इंद्रमहामदसुखकोहृतिगर्वप्रहा
र्यो। १। बहुतजतनमघवाकापीपाछोनसमहास्यो। वे
रुकियोब्रजनाथसोअपुनहाहास्यो। २। सुरभीलेपा
यनपस्योअपराधनिवार्यो। कृष्णदासकेप्रांनको
हसिवदननिहास्यो। ३। २॥ **रागवि०।** चिरजीयोला
लगोवर्द्धनधारी। सातघोसजलशृष्टिनिवारीया
दोदापरवारिदारी। १। देवराजप्रतिज्ञामेरीगोपभेरव
लीलाअवतारी। नलकुवेरमुंनिग्रीवउवारीवाल
कहिसापूतनामारी। २। देतअसीससकलगोपीज
नराजकरोहंदावनचारी। परमानंददासकोगकुरअ
नुदिनअभतिहरतहमारी। ३। ३॥ **रागसारंग।** कां

१५६

रुकुंवरकेकरपल्लवपरमांनोगिरवरनिर्तकरेरी। ज्यो ज्यो
तांनउठतमुरलीमेंत्योत्योलालनताहिधरेरी। १॥ मेघम
दंगीमदंगवजावतरांमिनिर्मकेंमांनोदीवदिजरेरी।
गवालतालदेउघरतपाछेंगायसप्तसुरमुघरभरेरी। २।
रीरुतसकलसंतजनगोपीवरपाअमजलस्वेदरुरेरी। वा
लकेलिकरतअतिमुंदरनंददासकेडुखहरेरी। ३॥ **अ
थभाईइंद्रजकेपदा। रागसारंग।** भाईइंद्रजकोजानिकेंमो
हनबहनिमहोडाकोन्योतावत। उचरिहवायरोऊभैया
बलिवागोअतलसलालबनावसी। १। दीहोसोकांधिसि
रऊपरअभूषनबहुविधिपेरेरावत। पूरीदहीभातथा।
१। भरिरोहिनायेंसवसाजमेगावत। २। कीनोतिलकस
होडावेलिहैनिरजनीजागिकेंहरखवदावत। जेवतहेंव
लिस्योमप्रीतिसोमागिलेतजोमनभावत। ३। मुख
प्रक्षालिवीराहसिदेकेंभगिनीपांनदेपुंनिसिरनावत
देतअसीससदाचिरजीवोदरिकेशनितप्रतिगुंनग
वत। ४॥ १॥ **सारंग।** जसोमतिथारसाजिकेंवेगीमों
हनतिलककरावेहो। वैठिअंकभोजनकरेलालनभाई
इंद्रमनवेहो। १। देखिनंदउपनंदगोपसवहोरिदोरिदुल
रावेहो। श्रीमुखचंदनिराघिगोपीजननेननिकोरसि।

भा० ३०३. गावे हो ॥ सुदित भई अति रोहिनी माता मुख अंतर उप
 जावे हो ॥ नाना भांति सकल गोकुल त्रिय मंगल गीत नि
 गावे हो ॥ यह लीला अवगाहन करिये जो चित वनि उ
 र आवे हो ॥ कां नृ प्रवीन यह साधन बल श्री कलभ परज
 पावे हो ॥ ४२ ॥ अथ गोपाष्टमी के पद ॥ राग सारंग ॥
 गोविंद चले चरावन गैया ॥ हीनो हेरि पिआज भोजिने
 क ह्यो हे जसोदा मैया ॥ उबटि नृवाय वस भूषन स
 जि प्रमुदित विप्रनुदेत वधैया ॥ करि मिरतिलक आर
 ती वारति फिरि फिरि लेत वलैया ॥ चतुर्भुज दास द्या
 क छीकें सजिस घन सहित लीन बलि भैया ॥ गिरधर ग
 वनु देखि अंक भरि मुख चो ब्रज रैया ॥ १ ॥ सारंग
 गाय चरावन कोरि न्यायो ॥ फूली फिरति जसोदा
 अंग अंग लालन उबटि नृवायो ॥ भूषन सनपल
 रिषे हेराए कजर तिलक बनाये ॥ विप्रबुलाय वेद धुनि
 कीनी मोतीन चोक पुरायो ॥ २ ॥ देत असी ससकल ब्रज
 वासी हरयित मंगल गायो ॥ तटकत चलत लाडिलो व
 न को परमानंद जिय भावयो ॥ ३ ॥ अथ देव प्रबोधनी
 के पद ॥ राग सारंग ॥ आनु प्रबोधनी परम मोद करि च
 लिप्यारी पीयपे ले जाऊ ॥ वो हो तईष के कुंज पुंजर ची

चहुं ओर ही पक सो होई ॥ घर घर गोपी चोक पूरत सब बंद
 न मालव धाई सिंघासन गाहीत किया धरे करे उठ्या
 पन गोकुल राई ॥ २ ॥ हरे भरे सब तर मेवा धारि सांम ग्रीस
 व भोग लगाई ॥ चारि जांम जागरन जागिनि सजागे देव
 गोवर्द्धन राई ॥ ३ ॥ मंगल आरती करि जमंगल प्रेक्ष
 गन आनंदन समाई ॥ रसिक प्रभू मंगल निधि मंगल
 मंगल रूप राधा मुख दाई ॥ ४ ॥ कां नृ गोपाष्टमी ॥ आनु प्रबो
 धनी परम मोद करि चलिप्यारी पीयपे ले जाऊ ॥ वो हो
 तईष के कुंज पुंजर ची चहुं ओर ही पक सो होई ॥ १ ॥ चि
 त्रविचित्र भूमि अति चीतिकरि उठ्या पन हरि हे जग
 जं ॥ ताल मृदंग संख धुनि बाजे दारें बंदन मालव धाऊं
 २ ॥ चारि जांम जागे नि सजागर चारि भोग अधरामृत
 पांऊ ॥ रसिक प्रभू केर हो सिंधु में नैन निमी नरु को
 र नृवांऊ ॥ ३ ॥ कां नृ गोपाष्टमी ॥ जागे जग जीवन जग नायक
 कीयो प्रबोध देव गन जव ही उठे जगत मुख दायक ॥ जा
 प्रभु की प्रभु ताई भारी सिव ब्रह्मादिक पायक ॥ कमल रा
 सी पाय पलोटे निपुन निगम से गायक ॥ २ ॥ जहां जहां भी
 र परत भक्त न को तहां तहां होत सहायक ॥ परमानंद प्र

श्रीगु
१५८

भुभक्तवदुलहरिजिनकेमनवचकायक ३५॥ **अथ**
व्याहकंपदा॥ रागसारंग॥ अपनेलालकोव्याहकरुंगी
वडेगोपकीवेटी॥ जासोहमसोजतिपाचारोभोजनभे
टाभेटी॥ मातजसोदाताउलडावेअंगसिंगास्करावे
कस्तूरीकोतिलकवनावेचंदनपीतचटावे॥ **कुरिरी**
मैयाकंबलावेगीमोकुंदुलरियानीकी॥ **पुंसीपरोस**
केंमोयखवावेरोटीचुपरीघीकी॥ **एगवगालवरा**
तचलेंगेंहंचहंगोघोरी॥ जनपरमानंदपानरखावेवी
राभरिभरिभंजोरी॥ **रागविहागरो** कुंजभवनमें
मंगलचारा॥ नवदुलहिनिभूषणभानकिसोरीनवइल्ह
वजराजकुंमारा॥ **नगरो** पुष्पकुंजकेतोरननवपेक्ष
वकेचंदनचारा॥ **चंदी** कंदमखंडवेंसीवरमघनलतामें
उपविस्तारा॥ **अकर** तवेदधुनिविप्रमधुपगनकोकिल
त्रियगावतुंगेनसार॥ **दीनी** भूरदासपरमानंदप्रेमभक्त
रतननकोहारा॥ **विहागरो** श्रीचलिइल्हदेषन
जांझी॥ सुंदरस्याममाधुरीमूरतिअखियांनिरखिसि
रांझी॥ **जुरि** आईब्रजनारिनवेलीमोहनदिसमुसि
कांझी॥ मोरबन्योसिरकांननकुंडलमरुवदिमुखहिंसो

१५८

हाय॥ **पेहेरें** जसकसीवसनभूषणअंगअंगमनअरु
जाय॥ तेसीयेवनीवरातछविलीजगमगरंगचुचाइ॥
गोप सभासरवरमेंकूल्योकमलपरमरुपटाइ॥ नंद
दासगोपिनकेअंगअलिदेषनकोललचाइ॥ **४३॥**
विहागरो॥ जुगलवरआवतहेंगाठिजोरेंसंगसोभि
तहृस्वभाननंदिनीललितादिकतनतोरें॥ **सीस** से
हरोबन्योहेलालकेंनिरविहरविचित्रचोरें॥ **निरविनि**
रविवलि जायगदाधरछविनवदीकछूथोरें॥ **२४॥**
अथ श्रीगुसांईजीकीवधाईकेपदा॥ रागदेवगंधारा॥
बहुरिइल्हअगोकुलप्रगटैश्रीविहलनाथहमारे॥ **दा**
पुरवसुधाभारहस्योदोरकलियुगजीवउछारे॥ तवव
सुदेवग्रहप्रगटहेंयकेसासासिसुतिपुत्रोरे॥ **अव** श्रीव
क्षभग्रहप्रगटहोयकेमायावाहनिवारे॥ **अमोक** विको
हेकलिसरियांवरनेगुंनजुतिहारे॥ **मानिक** चंदप्रभुकी
सिवस्वोजतगावतवेदपुकारो॥ **देवगंधारा** अवकेंदि
जवरकेसुखहीनो॥ **पेहेलें** नंदयमोहानंदनकेंहरिआ
नंदकीनो॥ **जकनी** नो गोपालभेषअववेदस्मृतदट
कीनो॥ **अत** स्वांमिगिरिधरनश्रीविहलभक्तकृपारस

॥ श्री ० गुण ॥ भी नो ॥ २ ॥ राग ॥ आसावरी ॥ प्रसमासनोमीको सुभदिन पु
 ॥ २५ ॥ त अकाजी जायो हो ॥ सुनि सुनि जजन अति आनंदिरधि
 त करत वधायो हो ॥ नारदादि ब्रह्मादिक हर वै शुक मुनि अ
 तिसुषयायो हो ॥ श्री भागवत विवेचन करिके गद अर्थ प्र
 गदायो हो ॥ २ ॥ कलिके जीव उधारन कारन द्विज पथ
 रायो हो ॥ अति उदार श्री लक्ष्मन नंदन देत दान मन भायो
 हो ॥ करत वेद धुनि विप्र महा मुनि जातिके मकर वायो
 हो ॥ मानिक चंद्र प्रभू श्री विहल को धिमलि विमलि ज सु
 गायो हो ॥ ३ ॥ राग ॥ धना ॥ पुनोरी ॥ अजनवल वधायो
 हो ॥ श्री वल्लभ ग्रह प्रगट भये श्री पुरुषोत्तम जायो हो ॥ ने
 नन को फल लेहु सखी ॥ भयो मन को भायो हो ॥ श्री गिरधर
 फिरि प्रगट भये हो ॥ श्री नो भाग ते पायो हो ॥ २ ॥ मानि मुगता फ
 ल वंदन माला ॥ धार वधायो हो ॥ श्री गोकुल में घर निघर
 नि प्रति आनंद अगनित छायो हो ॥ ३ ॥ इज कुल चंद्र उदित
 भयो हो ॥ सब विस्व कोति मरन सायो हो ॥ भक्त चकोर मगन
 आनंदित हियो सिरायो हो ॥ जाके भागि वडे पाकलि में
 जिन ही दरसन पायो हो ॥ अव आनंद वधायो हो ॥ सब दुषइ
 खिसायो हो ॥ ४ ॥ मया रापुष्टि पथ यापन आयो आयु न

आयो हो ॥ करि करुणा श्री गोकुल प्रगटे विविध दान दि
 वायो हो ॥ ४ ॥ महाराज श्री वल्लभ भरांनी रान देत मन भायो हो
 जो जाके मन हता कांमना सोतिन पायो हो ॥ ६ ॥ धन्य धन्य
 भाग मुहाग भरी जिनि गोद खिलायो हो ॥ १ ॥ मिक भाग ते प्र
 गट भए हो नि जानंद दरसायो हो ॥ ५ ॥ राग ॥ सारंग ॥ श्री
 वल्लभ मुप्रताप फलित लीला गुंन भावलं लिखि प्रगटे श्री
 विहलेश गोकुल सुषासी ॥ नष सिष को भा अरु पक
 लि मुग उद्धरन भूपरुप सुधा पांन करन ननि जजन वासी
 ॥ १ ॥ न बंधु कृपा करन चित्त बति वेता पहरन छिन छिन
 आनंद कंद अंबुज सुषासी ॥ चतुर्भुज प्रभु गुल रूप न
 दनंदन घोषनाय विहरत ए साय सरांगिरी गोवर्दन नि
 वासी ॥ २ ॥ राग ॥ सारंग ॥ श्री वल्लभ श्री वल्लभ श्री वल्लभ
 सुषाजाके ॥ सुंदर नव नीत के पीय आवत हेतारी के हीय
 जनम जनम जपत पकरि करा भयो अमया के ॥ १ ॥ मन व
 च अथ तल रासि दान को प्रगट अनल पद तर को मुरन
 र मुनि नाहिन उपमां को ॥ छीत स्वांमि गोवर्दन धारी कुं
 वर आय सरन प्रगट भये श्री विहलेश भजन को फल ता
 को ॥ २ ॥ ॥ सारंग ॥ गोवल्लभ गोवर्दन वल्लभ श्री वल्लभ गुं

॥ श्रीगुरु ॥

॥ १६० ॥

नगिनेन जाई भुवकी रैन नरै पान भकी घन की बूंद न पर
तल खाई ॥ जिन के चरन कमल रज चित त संत त होत
सवे चित च ॥ छी त स्वां मि गिरि धर न श्री विहल नंदन
दन की सब पर छाई ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ जेव मुदेव की ये पूर
नत पतेई फल फलित श्री वल्लभ देव ॥ जे गोपाल दुते गो
कुल में तेई च वचन निवसे कर गेह ॥ जे वे गोप धूहा वृज
में तेई च वदे रुचा भई येह ॥ छी त स्वां मि गिरि धर न श्री वि
हल तेई ऐं तेई कछु न संदेह ॥ २ ॥ राग सारंग के सरिकी
धोती पेहेरें के सरी उपरे नाओ दे के सरिको तिल कभाल
मुंझा मधि सोहे ॥ अ वल्लभ नमनि मुक्ता धरें कोटि मदन मां
नहरें मुकलित सिर के सरेषि कौन कौन मोहो ॥ श्री वल्लभ
भक्त निमु जान उभा कौ नाहिन आनन वसिर वगिर
धरन रूप देहें ही वनि आवें ॥ सुंदर ताई नि काई तेज प्र
ता पर कौ ताई नंदन दन विहल ले शा एक ही कहावे ॥ २ ॥ अप
ने कर करि सिंगार देषि ही छविले लाल गोटे निज मंदिर में
नीरा जन वारे ॥ घंटानाद फाल स्वाजे जे जे जे शब्द गा जे
आपुन पेहरि हास वारि वारि डारे ॥ ३ ॥ अथ वसंत वेपथु
राग वसंता ॥ हरि रिह वृज जुवती सत संगे ॥ विलसत करु ॥

१६०

ली गल शतवारण वरई वरति पति मान भंगे ॥ टेक ॥ वि
भ्रम संभ्रम लोल खिलोचन सूचित संचित भावं ॥ कापि
द्रगं चल कुवलय निकरै रंचित तं कुलरावं ॥ स्मित रु
चिरुचिर तरान न कमल मुदीक्ष हरे रतिकंद ॥ चुंबतिक ॥
पिनितं ववती करतल धृत चिबुक ममंदं ॥ उद्भवा
वधि भावित चापल मोहन निधुवन साली ॥ रमयति
काम पिपीन घनस्तन विलुलित नव वसुमाली ॥ ३ ॥ नि
ज परिरंभ कतेन दुतं मभि वीक्ष हरि विलासं ॥ काम पि
कापि वलार करोद गे कुत के न पहासं ॥ ४ ॥ काम पिनी वी
बंध विमोक स संभ्रम लज्जित नयनं ॥ रमने संप्रति मुमु
खि वलाद पिकरत लधुन निज वसनं ॥ ५ ॥ पिप परिरंभ वि
पुल पुल कावति विगुणित सुभग सरीरा ॥ उजायति
सषी कापि सम सहरिणारति रागधीरा ॥ ६ ॥ विभ्रम संभ्र
म गल दं चल मलयोचित मंद मुदारं ॥ पश्यति सस्मित
मति विस्मित मन सा मुद्र सविकारं ॥ ७ ॥ चलतिक या
पिसमं सकर ग्रह मल सतरं सविलासं ॥ श्री राधे तव प्र
रयतु मनोरथ मुदित मिदं हरिरासं ॥ ८ ॥ वसंत ॥
श्री पंचमी परम मंगला दिन मदन मोहोदय आज वसं

॥ वसंत ॥ तव नायचली व्रजवनिता करि पूजा को साज ॥ **॥ कनक**
॥ १६१ ॥ लसजल प्ररिपटत रितु को ममंत्र रसमूल ॥ तापर धरी
 रसाल मंजरी ॥ अमृत पीत डुकूल ॥ २ ॥ चोवाचंदन अंग
 रकुं मकुं मानव के सरि घन सार ॥ नाना धूप दीप बहु हा
 जत विविधि भांति उपहार ॥ ३ ॥ वाजत ताल मृदंग मु
 रज उफवी नापट हउपंग ॥ सरस वसंत मधुर सुरगाव
 त उपजत तान तरंग ॥ ४ ॥ छिरकत प्रति अनु राग मुदि
 त गोपी जन मुदिता गोपाल ॥ मानो सुभग कनक कद
 ली मधिराज तत रुनत माल ॥ ५ ॥ इह विधि मिली रि
 तुराज वधावत सकल घोष आनंद ॥ हरि जीवन प्रभु
 गोवर्द्धन धर जे जे गो कल के चंद ॥ ६ ॥ **॥ वसंत ॥** स्या
 म सुभगत न सो न छीटे नी की लागी चंदन की ॥ मं
 डित सुरंग ॥ अवीर कुं मकुं मा ॥ ओर मुदे सरज वंदन की ॥
 १ ॥ कुंभन रास मदन तन मन बलिहार की यो नंद नंदन
 की ॥ गिरधर लाल स्वी विधि मानो जुवती जन मन
 फंदन की ॥ २ ॥ **॥ वसंत ॥** केसरि छीट रुचिर बंद
 नरज स्या म सुभगत न सो हो ॥ बीच बीचो बाल परां
 नो उपमां को हां को हो ॥ ३ ॥ रितु वसंत के आगम ओस

रसाधाना गरि जो हो ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरि धर नला न छ
 बिकोटिक मन मथ मो हो ॥ ४ ॥ **॥ वसंत राग** गिरधर
 लाल की बांनिक ऊपर ॥ आनु सषीत नंद रेरी ॥ उडत गु
 लाल ॥ अवीर ॥ अंग जा पिच कांई नरंग छे रेरी ॥ लाल
 के ने नरग मगे देषि पत अंग ॥ अनंग नल रेरी ॥ कल रा
 सधं निध निराधिका ॥ अधर सुधार सधं रेरी ॥ ५ ॥ **॥ राग**
॥ वसंत गिरधर लाल रस भरे खेलत विमल ॥ वसंत राधि
 का संग ॥ उडत गुलाल ॥ अवीर ॥ अंग जा छिरकत भरत
 परस्पर अंग ॥ १ ॥ वाजत ताल मृदंग ॥ अधो दीवी ना मुरली
 तान तरंग ॥ कुंभन रास प्रह ॥ इह विधि की डत जमुं न पु
 लिन तजावत ॥ अनंग ॥ २ ॥ **॥ वसंत ॥** खेलि खेलि होल
 उंती श्री राधे हरि के संग वसंत ॥ मदन गोपाल मनो ह
 र मूरति मिल्यो हे भांमतो कंत ॥ ३ ॥ कोन पुंन्य तप को फ
 ल भांमिनि चरन कमल ॥ अनु राग ॥ कमल नैन कमला
 की वल्लभ कनकें मियो हे सुहाग ॥ ४ ॥ यह कालिंदी यह हं
 दावन यह तरुवर की पांति ॥ परमानंद स्वांमि संग की ड
 त घोसन जा नी राति ॥ ५ ॥ **॥ वसंत ॥** भांमिनि चंपे की
 कली ॥ वदन फाग मधु परसलं पटन वरंग लाल अली ॥

॥ वसंत ०

॥ १६२ ॥

चोवाचंदन अंगरकुं मकुं माकरि वसिं गार चलो। धेल
तसरस वसंत परस्पर रविकी कांति मली। २। तालम
दंग कांति डफवी नाबी चवी चमुरली। कस्तूर सप्रभ
नवरंग गिरधर हिलि मिलि रंगरली। ३॥ वसंत ॥
खेलत वसंत वर विहलेश। अनंद कंद गो कुल सुदे
स। १। श्री गिरधर गोविंद संग। श्री बालक सुलजित
अनंग। २। श्री गोकुल नाथ अनाथ नाथ। रघुना
थ नवल जड नाथ साथ। ३। श्री धनंजय म अमिरां
मधाम। कल्यान राय परि प्ररुकोम। ४। मुरली ध
र आरि समस्त बाल। सेवकी विचित्र सेवार साल। ५
तहां वाजत तालम दंग। डफ और आवज सु
र उपंग। ६। श्री गिरधर धारी जहां खेलन आइ लघु
गुपाल बलि हां जाइ। ७। वसंत ॥ तेरी नवल त
रुन तान वसंत। नवन वविलास उपजत अनंत
१। नव अरुन अधर पल्लव रसाल। फले विमल कम
ल लोचन विसाल। २। चलि भ्रुकुटी भ्रंग भ्रंगन की
पांति। मडुह सनद सनकु सुमनिकी भांति। ३। भई
प्रगट अलपरो मावली मोर। स्वास सौरभ मलयप

१६२

वन रुकोर। ४। चल फल उरो ज सुंदर सुवांन। चोले म
धुरम धुर को किला गांन। ५। देषत मोहे ब्रज कुं वर रा
स। बाढो मन मय मन चोगु नो चाय। ६। तोहि मिलि
विलस्यो चाहत हे स्याम। जाहि देषत लजित कोटि
कोम। ७। तव चली चरन मंथन विहार। वाजे रुं रुं रुं
नुन नु पुरुं कार। ८। सुनि पुलकित गोकुल पति
कुमार। मिलि भयोग राधर मुख अमोघ। वसंत
श्री हंदा वन खेलत गोपाल। बनि वनि आइ सब ब्रज
की बाल। १। नव सुंदर वनी नवन माल। फले नवल कम
ल मधिन वर साल। २। अने कर सुंदर रचित माल। अ
वलं वित नागर नंद लाल। ३। नव गोप वधू राजत हे सं
ग। गज मोति न सुंदर लसत मंग। ४। नव केसरि मेदे अ
रग जाघोरि। छरकत नागर को नव किसोर। ५। तहां
गोपी ग्वाल सुंदर सुदेस। राजत मलय जु विविधिके
स। ६। नंद नंदन की भुव विलास। सदां र हो मन सूरदास
७। राग वसंत। असे नवल लाल खेलत वसंत। जहां
मोहिर हे सब जीव जंत। १। फले कुसुम अने करंग। उ
तसे न सजे डोले अनंग। सीतल सुवासला गोपवन